
आदिमानव
नहीं रमेश, मैं हाथ जोड़ती हूं, मुझे आइंदा प्रेम पत्र मत लिखना, मुझे डर लगता है। इसमें खतरा है।
क्या तुम मुझसे प्रेम नहीं करती? वह सब चांद सितारों की बातें झूठी थी? मैं ने सच्चे दिल से तुमसे प्यार किया है। और तुम मुझे वफा के बदले ज़फा दे रही हो? क्या तुम किसी और से प्रेम करने लगी हो?
नहीं! प्रेम तो तुम्हीं से किया है और करती रहूंगी. यकीन मानो
फिर प्रेम पत्र लिखने की मनाही क्यों? हम एक दूसरे से प्यार करते हैं कोई चोरी नहीं। मैं तुम्हारे लिए दुनिया की किसी ताकत से भी टकराने को तैयार हूं। मैं जंगल को मैदान बना दूंगा। बड़े बड़े देनासोर, टायनासॉरस और स्टैगोसॉरस से टक्कर ले सकता हूं। मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता! मेरे प्रेम पत्रों से तुम्हें डर क्यों लगता है? किसी को पता लग जाये तो लगने दो। हम शादी तो करेंगे ही फिर खतरा कैसा?
अपनी आंखों से देख लो खतरा कैसा है? मेरी गुफा के सामने तुम्हारे प्रेम शिला लेखों का कितना बड़ा ढेर हो गया है! गुफा में आते जाते भी डर लगता है कि कोई शिला खिसक कर सिर पर न आ पड़े। मैं मर गयी तो किससे शादी करोगे? आगे से और प्रेम शिलालेख लेकर आये तुम तो तुम्हारे ही सिर पर मारूंगी
?

काका के कारतूस



वेद प्रकाश कृपलानी, तिल्दा कैम्प

प्र०: किसी प्रिय की याद सताए तो उससे क्या कहें ?

उ०: हम तेरे प्यार में, ए यार वहां तक पहुंचे।
जहां ये भूल गए हम, कि कहां तक पहुंचे ?

जितेन्द्र सिंह चड्ढा, गुडियारी (रायपुर)

प्र०: हेमा मालिनी और काकी में अन्तर बताइए ?

उ०: हेमा ने अध बूढ़े धर्मेन्द्र को अपनाया,
काकी को कुँवारा वर, काका कवि मन भाया।

अश्वनी कुमार सोनी, कंडियाल (पंजाब)

प्र०: आपके बाद 'कारतूस' कौन चलाएगा काका ?

उ०: प्रश्न पत्र के ढेर से, भर लेंगे संदूक।
ले जाएं हम साथ सब, कारतूस-बन्दूक।
(न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी)

छोटे लाल अंसारी, अकेला, दमोह

प्र०: कहते हैं—प्यार किया नहीं जाता, अपने आप हो जाता है ?

उ०: चुम्बक खींचे लौह को, सुन्दर खींचे प्यार।
बिजली चमके, मिले जब धन-ऋण के दो तार।।

अहमद जमील, कोंडागांव

प्र०: मोरारजी की बुद्धि को क्या हो गया, जो रूस के खिलाफ बोल गए ?

उ०: सत्ता से पत्ता कटा, मन में है अफसोस।
'जीवन जल' का असर है, उनका क्या है दोष ?

चूर्ण वर्मा, कनाट प्लेस (नई दिल्ली)

प्र०: प्रेमिका, प्रेमी के पास कब आती है ?

उ०: प्रेम-फेंकती प्रेमिका, खाली हो जब पर्स।
आती प्रेमी के निकट, खाकर खुद पर तर्स।।

रवीन्द्रनाथ सरीन, लुधियाना

प्र०: जिन्दगी पहेली कब बन जाती है ?

उ०: तू-तू, मैं मैं चले जब पति पत्नी के बीच।
बने पहले जिन्दगी, होय कलह की कीच।।

हसनैन नकवी, अमरोहा

प्र०: बिजनौर में एक बड़े मियां तीन फुट के हैं, जब उनको कोई लम्बा आदमी सलाम करता है, तो गाली क्यों देते हैं ?

उ०: यह इतना लम्बा हुआ, हम हैं इससे हाफ।
गाली बकते देख कर, मौला का इंस-

अशोक एण्ड गोगी, आदमपुर

प्र०: आजकल बिना रिश्वत के कोई कांम नहीं होता, ऐसा क्यों ?

उ०: भोग प्रभू का लगाकर, जीतें बेईमान।
ईश्वर रिश्वत खा रहा, क्यों न खाय इंसान ?

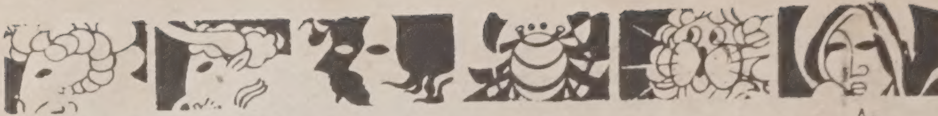
राजकुमार चतुर्वेदी 'नवीन' मेरठ

प्र०: पदमिनी कोल्हापुरी ने प्रिंस चार्ल्स का चुम्बन लिया, इस पर आपकी प्रतिक्रिया ?

उ०: चुम्बन लेकर चार्ल्स का, खूब कमाया नाम।
फिल्मों में अब पद्मिनी, पावे दूने दाम।।

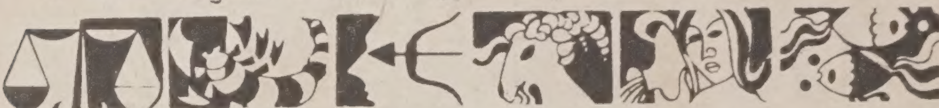
काका के कारतूस
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग
नई दिल्ली - ११०००२.


मदहोश
ओह ! बेचारी चिड़िया मरी पड़ी है। देखो, जिन्दगी का कोई ठिकाना है !
मैं ही इस पर मिट्टी डालता हूं। अंतिम संस्कार तो करना ही पड़ेगा। राम नाम सत है।
मदहोश होश में आ
ओये मदहोशा ! तू ऐ की कर रहया है ? मेरे क्रिकेटिंग गियर कैप और ग्लब्ज़ पर मिट्टी डालेगा ?



आपका भविष्य

पं० कुलदीप शर्मा ज्योतिषी सुपुत्र दैवज्ञ भूषण पं० हंसराज शर्मा



मेष : स्थायी कामधन्धों से लाभ होता रहेगा, यात्रा सफल, आय में वृद्धि, आत्मविश्वास दृढ़ रहेगा, छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा, मित्र सहयोग से सफलता मिलेगी, अशुभफलों में कमी और शुभफल बढ़ेंगे, रोज़गार ठीक चलेगा।

वृष : व्यवसाय में नरमी, परिश्रम सफल रहेगा, घेरलू झंझट होंगे, आय-व्यय समान, कोई विशेष सूचना मिलेगी, कारोबार में दृढ़ता, व्यर्थ की बातों से परेशानी होगी, कारोबार मध्यम, यात्रा न करें तो अच्छा है।

मिथुन : लाभ अच्छा पर खर्चा भी साथ-साथ रहेगा, यात्रा सफल, घरेलू परेशानी बनेगी, रोज़गार से लाभ अच्छा, मशीनरी आदि पर व्यय, परिश्रम द्वारा कोई विशेष काम बनेगा, मनोरंजन आदि पर व्यय।

कर्क : कामधन्धों में रुकावट, लाभ भी पूरा न मिलेगा और मानसिक परेशानी रहेगी, मित्र मदद देंगे, हालात सुधरेंगे, आर्थिक दशा अनुकुल होगी, यात्रा सफल पर करें सावधानी से, शत्रु एवं रुकावटों पर विजय।

सिंह : व्यय कुछ अधिक होगा, परन्तु सफलता मिलती रहेगी, विशेष दौड़धूप से परेशानी, लाभ अच्छा होगा, कामधन्धों में परेशानी, मित्रों से मन-मुटाव, लाभ कुछ देर से मिलेगा, घेरलू खर्च बढ़ेगा, परिवार से सुख सहयोग।

कन्या : कोई विशेष सूचना मिलेगी, यात्रा करनी पड़ सकती है, नातेदारों से मेल-जोल, आय-व्यय समान, व्यापार ठीक चलेगा, आर्थिक लाभ देर से या आशा से कम, घेरलू खर्चा बढ़ेगा, दिन ठीक नहीं।

तुला : राजकाज में सफलता, आर्थिक दशा सुधरेगी, परिश्रम काफी रहेगा, कारोबार से लाभ मिलेगा, शुभफल अधिक होंगे, यात्रा लाभप्रद, मशीनरी एवं घेरलू खर्चा बढ़ेगा, कारोबार ठीक चलेगा, रुकावटें दूर होंगी।

बृश्चिक : व्यय अधिक आय यथार्थ, शुभफलों की प्राप्ति होने पर भी मानसिक परेशानी बनी रहेगी, कारोबार से लाभ बढ़ेगा, शत्रु एवं रुकावटों पर विजय, परिश्रम सफल होगा, नया काम न करें।

धनु : व्यर्थ की बातों से परेशानी, अन्य हालात ठीक चलेंगे, परिश्रम सफल रहेगा, यात्रा में सुख, आय आशा से कम, सावधानी से रहें, दिन ठीक नहीं, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, भाग्य साथ देगा, हालात सुधरेंगे।

मकर : व्यय अधिक होने से परेशानी, परन्तु समय पर सहायता मिलती रहने से काम पूरे हो जाएंगे, यात्रा सफल रहेगी, कारोबार दृढ़, मनोरंजन एवं शुभ कार्यों पर व्यय होगा, समय अच्छा गुज़ेगा, आर्थिक तंगी आएगी।

कुम्भ : कोई विशेष समाचार मिलेगा, यात्रा हो सकती है, खर्चा काफी होगा, मित्र सहयोग देंगे, व्यवसाय नरम, रुकावटें दूर होंगी, सफलता मिलती रहेगी, कोई अप्रिय घटना हो सकती है, कारोबार ठीक चलेगा।

मीन : व्यर्थ के झंझटों से मन परेशान, यात्रा न करें तो अच्छा है, लाभ कम, खर्चा अधिक होगा, हालात सुधरेंगे, आय आशानुसार, यात्रा सफल रहेगी, आर्थिक दशा भी ठीक होने लगेगी।

हास्य-कथा

कैप्टन लाला

शिशिर विक्रांत

लाला लल्लूलाल को इस बात को सोच-सोच कर बड़ा मलाल हो रहा था कि आखिर वे इस क्षेत्र में ही क्यों पिछड़ गए? अपनी जानकारी में लाला ने हर प्रकार के सार्वजनिक कार्यों में एड़ी से गंजे सिर तक का भरपूर योगदान दिया था. [illegible] में वे आगे-आगे रहते, चाहें अपनी मिठाई की दुकान उनको बंद करनी पड़ी हो या सरबाज़ार बेलन को नचा-नचा कर ललाइन की दहाड़ भरी गालियां सहन करनी पड़ी हों. पर लाला जिस काम को अपने हाथ में ले लेते, जब तक उसका पूरी तरह मटियामेट न कर देते, नहीं छोड़ते थे.

"मोहल्ले वाले तो यों ही बका करते हैं. ज़रा मेरी जगह आकर काम करें तो मालूम पड़ जाए, बच्चुओं को . . ."—लाला से यदि कोई उनके हाथों हुई गड़बड़ी की ओर संकेत करता, तो वह इसी तरह कहते हुए भट्टी में पड़े अंगारों की तरह लाल-लाल आंखों को मटकाते हुए गुस्से से कहते.

मोहल्ले में हर साल होने वाली रामलीला में लाला ही अग्रणी रहते. सालों से रावण का पार्ट भी वे ही करते चले आ रहे थे. पर हर बार उनकी वजह से कोई न कोई गड़बड़ी हो जाती. कभी अपने संवाद ही भूल जाते तो कभी ये ही उनको ध्यान न रहता कि वे रामलीला की स्टेज पर हैं, न कि अपने घर में. एक बार तो हनुमान बने एक कलाकार के 'रावण' कहने पर, लाला अपना पार्ट भूलकर उसको लगे धमकाने, "रावण होगा तू, तेरा बाप, तेरे खानदान वाले. हम तो वही लल्लूलाल हलवाई हैं, जिनके यहां से तू दो महीने पहले चार सौ ग्राम बर्फी उधार ले गया था. पैसे तो दिए नहीं, रावण-रावण कहकर गाली ऊपर से दे रहा है." पर वस्तुस्थिति का भान होते ही लाला ने झट से परदा गिरवाया और एनाउंस करवा दिया, "जनता के मनोरंजन के लिए ही यह कैरीकेचर' किया गया था. अब रामलीला में आगे का भाग देखिए." खैर स्थिति बहुत कुछ संभल गई, पर रामलीला का सत्यनाश तो उन्होंने कर ही दिया था.

लाला चूंकि स्वयं ही आयोजक थे, इसलिए उनको निकालने का तो प्रश्न ही नहीं [illegible] था. एक बार तो रामलीला के असंख्य [illegible] को उस समय बड़ा मजा आया, जब धनुष-भंग का कार्यक्रम चल रहा था. दरबार में रावण बने लाला भी उपस्थित थे. जनक के द्वारा धनुष तोड़ने की विनती करने के



साथ ही लाला झटपट उठे और धनुष को एक हाथ से उठाकर स्टेज पर 'धड़ाम' से दे मारा. लोगों के बीच से उठे जोरदार हल्ले से जब उनको अपनी गलती मालूम पड़ी तो जनक से बोले, "अरे आप ने तो भूल से बच्चे के खेलने वाला 'पिनाक' यहां धरवा दिया है. भगवान शंकर का धनुष तो अंदर ही रखा होगा, उसे रखवाइए." झटपट पर्दा गिराया गया और दुबारा से वह भाग दिखलाया गया.

पब्लिक का इससे अच्छा मनोरंजन और कहां होता? इसलिए खूब भीड़ लगी रहती. लाला यदि इसकी वजह अपने को कहते तो सच ही तो कहते थे. लोग लाला का अभिनय ही देखने आते थे.

रामलीला की भांति ही [illegible]

प्रकार के कार्यक्रम लाला की बदौलत ही होते. जैसे, नौटंकी, कुश्ती प्रतियोगिता, पतंग-बाजी आदि-आदि. मजेदार बात तो यह थी कि लाला हर कार्यक्रम या प्रतियोगिता में खुद भी सम्मिलित होते. यह बात अलग थी कि एक बार 'कुश्ती-प्रतियोगिता' में कुश्ती लड़ने के लिए, उतरे लाला को उनके प्रति-द्वंद्व ने इतनी जोर से उठाकर ज़मीन पर पटका कि गले की कोई नश ऐंठ जाने के कारण लाला डेढ़ महीने तक एक अजूबा बने रहे.

खैर, ये सब तो उन्होंने किया ही था, पर लाला को दुकान पर बैठे-बैठे, जब इस बात का ध्यान आया कि सारी दुनिया में क्रिकेट की धूम मची हुई है, और उन्होंने इसके बारे में कभी सोचा तक नहीं तो लाला को ऐसा महसूस होने लगा कि उनका अब तक का जीवन व्यर्थ ही गया.

लाला वहीं पर बैठे-बैठे ध्यानमग्न होकर सोचने लगे कि किस प्रकार से 'क्रिकेट-प्रतियोगिता' का शुभारंभ किया जाए. इसी बीच में एक लड़का कब सामने रखा लड्डुओं का थाल उठाकर ले गया, लाला को जरा भी पता न चला. लाला तो बस इसी सनक में डूबे थे कि जल्दी से जल्दी वह इस काम को भी निबटा दें, वरना जिंदगी का क्या भरोसा ?

दूसरे दिन तड़के ही जाकर लाला ने अपना प्रस्ताव मोहल्ले के वयोवृद्ध मटरूजी के सामने प्रसन्नता से रखा. मटरू जी आश्चर्य से कभी लाला को देखते, तो कभी उनकी यह विचित्र बातें सुनते. लाला की सारी बातें सुनकर पहले तो मटरू जी पिचके आम जैसा मुंह, टमाटर की तरह गोल करके जोर से हंसे, पर लाला के दो-तीन बार समझाने के बाद उन से सहमत होते हुए बोले, ''लाला जी, बात तो आपने ठीक ही कही, पर रामलीला और अन्य कार्यक्रमों की तरह आप इसमें शरीक न होंगे तो बेहतर होगा, अन्यथा क्रिकेट का जनाजा उठते देर नहीं लगेगी.''

मटरू जी की बातों से लाला पहले तो बहुत उदास हो गए, क्योंकि बैट उठाकर संसार को वह भी अपना करिश्मा दिखाना चाहते थे. पर इसका ही उनको संतोष था कि मटरू जी ने उनके प्रस्ताव पर कम से कम हामी तो भर दी.

अगले दिन ही लाला लल्लूलाल ने मोहल्ले के घर-घर में घूमकर मोहल्ले के अच्छे क्रिकेट खिलाड़ी लड़कों की एक टीम बना ली. शरारती लड़कों ने लाला से यों ही मजाक के लहजे में कहा, ''लाला, हम तो आपके बच्चों के समान हैं. आपको तो अवश्य ही हम सबसे अधिक अनुभव है. यदि अन्य कार्यक्रमों की तरह इस टीम में भी शामिल हो जाएं, तो आपकी वजह से इसमें चार चांद लग जाएं.''

लड़कों ने तो यह खाली चुटकी लेने के लिए ही कहा था, पर लाला उनकी बात सुनकर ख़ुशी से फूले न समाए. भालू क्या चाहे ? शहद. लाला यही तो चाहते थे. उन्होंने अपने अनुभव का रौब, लड़कों पर जमाते हुए गर्व से कहा, ''हां, सोच तो मैं भी रहा था कि जब तक मैं नहीं रहूंगा, टीम कच्ची ही रह जाएगी. अपनी उम्र देखकर थोड़ी शरम खा रहा था. वैसे निश्चिंत रहो, मैं टीम में खेलूंगा, ज़रूर खेलूंगा और इतना बढ़िया खेलूंगा कि लोग मुझे भी समझ जाएं कि लाला लल्लूलाल जलेबियों को अच्छी बनाने के साथ, रन भी अच्छे बना सकता है.''

फिर लाला बुजुर्गाना अंदाज में बोले, ''अरे भाई, अब तो अपने देश की गरीबी की छाप खेलों पर भी पड़ने लगी है. अब तुम खुद ही देखो, ग्यारह खिलाड़ियों के बीच सिर्फ एक ही गेंद होती है.''

लाला की बात सुनकर सारे लड़के बड़ी मुश्किल से अपनी हंसी रोक पाए. लड़के

शेष पृष्ठ ४२ पर

सेठ घसीटा राम की

दीवानगी

पिछले दिनों घसीटा राम अपनी फटीचर हालत के लिये भगवान को कोस रहा था. और इस बात की दुहाई दे रहा था, कि भगवान कैसे-कैसे गधों को हलवा खिलाता है. पैसे की रेलपेल कर के जूतियां चटखाने वालों को सोने में तोल देता है. और एक मैं हूं कि बीस साल से दिल्ली में भाड़ झौंक रहा हूं पर मजाल है भगवान को कभी भूले से भी मेरी हालत पर तरस आया हो.

इस बात पर वह दहाड़ें मार-मार कर रोने ही वाला था कि उसके कमरे की खिड़की में तेज़ चमका और एक सुनहरी परी स्वर्ग से उतर कर उसके पास आ गई परी ने उसे बताया कि भगवान को अपनी भूल पर बहुत खेद है और उसने तुम्हें एक वरदान देने के लिये मुझे तुम्हारे पास भेजा है. लो, अब एक वरदान मांग लो और दुनिया के सब से बड़े धन्ना सेठ बन जाओ. चाहो तो यह वरदान मांग लो कि तुम जिस चीज़ को हाथ लगाओ वह सोने की हो जाये.

यह सुन कर घसीटा राम की बाछें खिल गई. उसे वह कहानी याद आई, जब गंगा दीन नाम के एक सेठ ने परी से ऐसा ही वरदान मांगा था और उसने अपनी हर चीज़ सोने की बना ली थी. पर जब उसे भूख लगी थी तो रोटी के निवाले को हाथ लगाते ही वह सोने का बन गया था. उसने एक गर्म-गर्म आलू का टुकड़ा उठा कर जल्दी से मुंह में डाला था, तो वह सोने की गर्म-गर्म डली में बदला गया था. और सोने की उस डली ने उसका मुंह जला दिया था. सेठ का भूख से बुरा हाल था. पर वह कुछ भी नहीं खा सकता था. मुंह में डालने के लिये वह जिस चीज़ को भी हाथ लगाता था, वह सोने की हो जाती थी. भूख के मारे अब सेठ की आंखों से आँसू बहने लगे थे. सेठ की यह हालत देख कर उसकी छोटी सी बच्ची उस से लिपट गई थी और सेठ का हाथ लगते ही बच्ची सोने का बेजान बुत बन गई थी. सेठ अब दुनिया में सब से धनी था पर उसकी हालत गरीब-से-गरीब आदमी से भी बदतर थी.

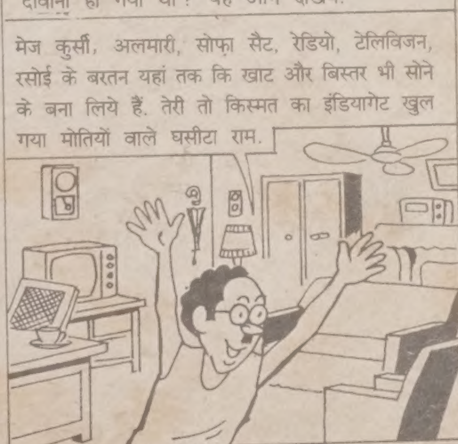
उस कहानी को याद करके घसीटा राम सेठ की तरह बेवकूफ़ बनना नहीं चाहता था. तुरंत ही उसने अपने ग्रेट दिमाग़ पर जोर देकर उस बेवकूफ़ी का तोड़ निकाल लिया और यह सोच कर निहाल हो गया कि परी भी क्या याद करेगी कि कोई झांसा देने वाला मिला था.

अब आव देखा न ताव, घसीटा राम ने फटाफट यह वरदान मांग लिया, कि वह जिस चीज को हाथ लगाये वह सोने की हो जाये. परी ने तथास्तु कह कर उसे यह वरदान दे दिया और बताया कि कल सुबह सूरज की पहली किरण फूटते ही, तुम यह वरदान पा जाओगे. और जिस चीज़ को हाथ लगाओगे वह सोने की हो जायेगी. और यह कह कर परी आँखों से ओझल हो गई.

घसीटा राम जानता था कि पुरानी कहानी में सेठ को एक ही परेशानी हुई थी, कि भूख लगने पर उसने खाने के लिए जिस चीज को भी हाथ लगाया था वह सोने की बन गई थी. इस का तोड़ करने के लिये घसीटा राम को पता था, डाक्टर झटका जड़ी बूटियों और दुर्लभ औषधियों पर प्रयोग करके ऐसी दवा बनाने में सफल हो गया है जिसे मनुष्य एक बार खा ले तो उसे जीवन भर भूख नहीं लगेगी. अब तो सारा टंटा ही मिट गया. न रहेगा बांस न बजेगी बंसी. जब भूख ही नहीं लगेगी, तो रोटी को हाथ लगाने का सवाल ही पैदा नहीं होगा.

सुबह होने में अभी देर थी. घसीटा राम डाक्टर झटका के पास गया और उससे भूख न लगने वाली दवा ले कर खा ली. अब उस की खुशी का ठिकाना नहीं था. जमीन पर रहते हुये वह आसमान का चमकता सितारा बन गया था. दुनिया का हर आदमी अब उसे अपने जूते चाटता हुआ नज़र आ रहा था.

अगली सुबह सूरज की पहली किरण फूटी, तो वास्तव में उसे परी का दिया वरदान मिल गया था. वह जिस चीज़ को हाथ लगाता था वह सोने की बन जाती थी. खुशी के मारे अब वह दीवाना हो गया था. कितना दीवाना हो गया था? यह आगे देखिये.




आज है कोई बड़े-से-बड़ा सेठ जो मेरा मुकाबला कर सके. लोगों के पास घड़ी की चेन सोने की होती है. बहुत हुआ तो कानों में सोने की बालियां पहन लेते हैं, गले में सोने की माला डाल लेते है. कमीज़ में सोने के बटन लगा लेते हैं. बस यहीं तक है उनकी औकात, अरे सेठ गैशैटे रैम की बगल में झाड़ू है तो वह भी सोने की है!
तभी वहां डाक्टर झटका आ गया.
कल बहुत बहकी-बहकी बातें कर रहे थे, तुम ने मेरी दवा खाली?
हां खाली.
कुछ असर हुआ? उम्र के बाद भूख लगी?
बिल्कुल नहीं लगी. और ऐसा लगता है, मेरी सात पुश्तों को भूख नहीं लगेगी
कल तुम कुछ पागलों जैसी बातें कर रहे थे. याद है?
याद है. उन में से एक पागलों जैसी बात यह थी कि मैं ने तुम्हारी धेले की दवा के बदले में एक मन सोना देने का वादा किया था.
मतलब है पागलपन का दौरा अभी जारी है
पर डाक्टर झटका घसीटा राम के घर के अन्दर आया तो उसकी आँखें फटी की फटी रह गइ.
यह मैं क्या देख रहा हूं अपनी फूटी आँखों से
जो तुम ने आज तक नहीं देखा इन संतरे की फांकों से.


तुम्हारा घर इतना जगमगा रहा है, यहां तो हर चीज सोने की है. मुझे विश्वास नहीं हो रहा है इस बात पर।
मेरे तकिये पर अपना सर देकर मारो. जब २४ कैरेट का सोना टन से बोलेगा. तब तो विश्वास आयेगा.
अब मैं अपना वचन निभा दूं तुम्हें सोना दे कर. वर्ना कहोगे घसीटा राम से रुठे गैशैटे रैम बन कर मैंने अपना वादा नहीं निभाया. एक मन की बजाये मैं तुम्हें दो मन सोना दूंगा. अभी दूं.
लाओ दे दो.
ए . . . . . .यह लो.
जैसे ही घसीटा राम ने डा. झटका के हाथ पर अपनी उंगली लगाई. डा. झटका सोने का बेजान बुत बन कर जहां खड़ा था वहीं खड़ा-का-खड़ा रह गया.
अब तोल लो अपने आप को तराजू में डाल कर। दो मन से दो चार किलो फालतू ही निकलेगा तुम्हारा २४ कैरेट का मल्बा.
अभी क्या चपर-चपर बहस कर रहा था. अब हो गई बोलती बन्द. दवा मैंने खाई है, पर भूख अब तुझे भी नहीं लगेगी कभी, माई डीयर सोने के 'स्टैचू'
तभी वहां डाक्टर झटका को ढूंढता हुआ मोटू आ गया.
ओ नंग फटीचर धन्ना सेठ, डाक्टर झटका का कुछ पता है? तुम्हारे लिये पागलखाने में सीट बुक कराने घर से निकले थे.
वह डाकखाने में तुम्हारी बिल्टी कराने का प्रबंध कर रहे हैं.
और जैसे ही मोटू अन्दर आया और उसने सोने की जगमगाहट देखी. उसकी सांस गले में अटकी रह गई.
म . .म . . .मैं . . . . य . . . . . .य . . . . .यह. सोना. असली २४ कैरेट का सोना.


अब बताना कल क्या कह रहे थे ? रेड़ी मैं लगाऊंगा, या तुम्हारे बाप दादा लगायेंगे ?
मेरी स . . . स . . . सात पुश्तें लगायेंगी पर यह मैं देख क्या रहा हूं.
जो सामने है वही देख रहे हो. मेरा मुकाबला धर्मेन्द्र, अशोक कुमार और देवानन्द से कर रहे थे. मोरार जी देसाई और हाजी मस्तान से कर रहे थे. अब बताना दुनिया में है कोई मुझ से बड़ा सेठ. मैंने अशोका होटल और मोरिया होटल खरीदने की बात गलत कही थी क्या ? मेरा घर तुम्हें रैन बसेरा सा लग रहा है क्या ?
कुछ भी नहीं लग रहा है बस ऐसा लग रहा है, जैसे मैं कोई ख्वाब देख रहा हूं.
अपनी बांह पर चूंटी मार कर देख लो, तुम ख्वाब देख रहे हो, या यह हकीकत है.
और जैसे ही घसीटा राम ने मोटू के चूंटी भरी, मोटू सोने के बुत में बदल गया.
अरे तुम क्या चूंटी भरोगे. लाओ मैं भर लूं.
क्या चपड़-चपड़ जबान चला रहा था ! अब हो गई छुट्टी. जितना मोटा गैंडा था, उतना ही भारी सोना बना है. तेरे जिस्म के हिस्सों को तोड़-तोड़ कर सोने के बिस्कुट बनाऊंगा.
तभी वहां मोटू को ढूंढ़ता हुआ पतलू आ गया.
अरे ओ सेठ भुक्कड़ मल ठनठन गोपाल. यहां डाक्टर झटका और मोटू आये हैं क्या ?
हां, यहां कथाकली का नाच कर रहे हैं. अंदर आ कर देख लो.

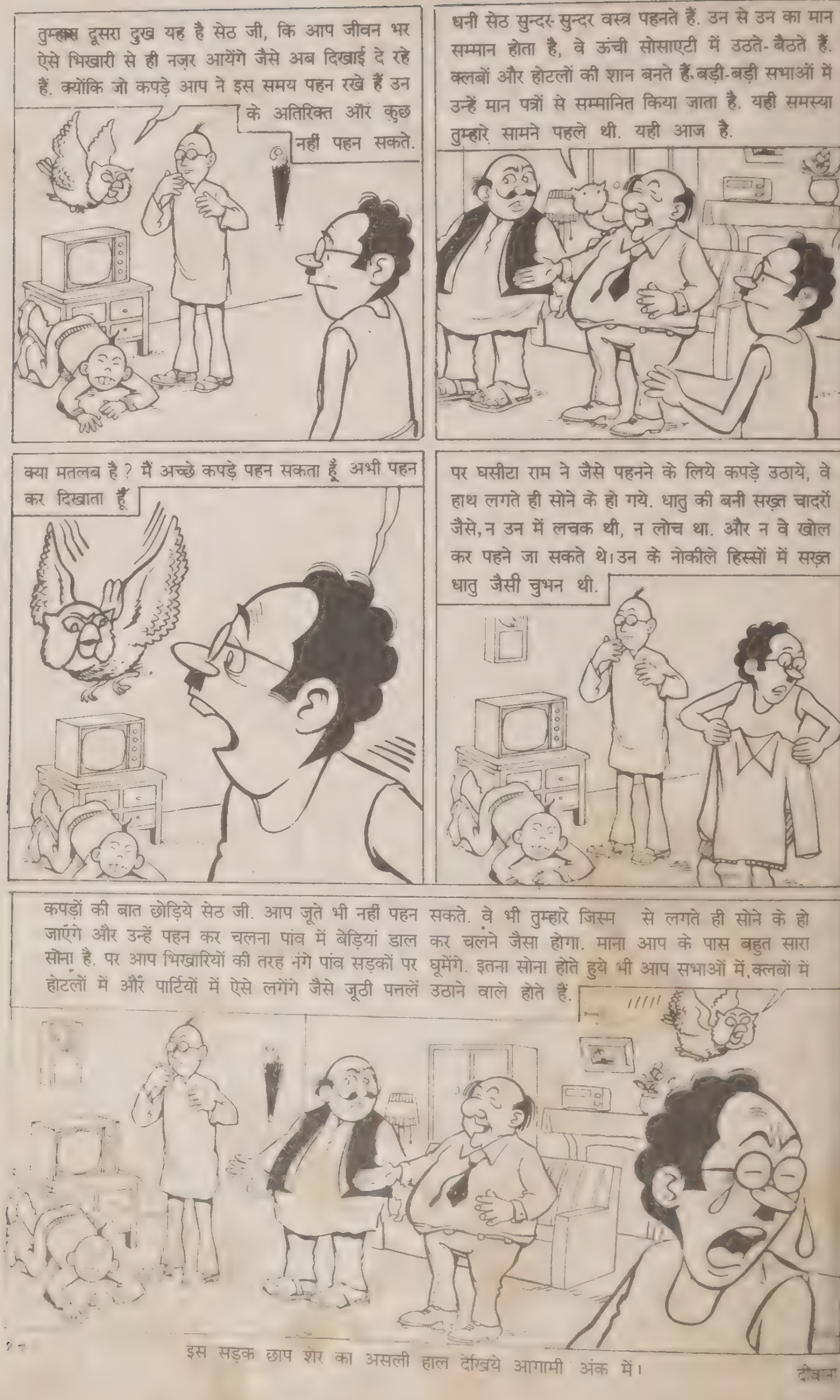


इतना सोना! हर चीज सोने की! क्या देख रहा हूं मैं? मेरी आँखों का सत्यानास हो गया है क्या?
अभी तो आँखों का ही सत्यानास हुआ है, अब दिमाग का और जिस्म का भी होगा.
कहां से मारा इतना सोना?
रात शिकार पर गया था, वहां से मार कर लाया हूं
गिटार बनाया था, उसके तार से लाया हूं? क्या कह रहे हो? कोई जादू का गिटार है क्या तुम्हारे पास?
गिटार नहीं, शिकार कह रहा हूं बहरे शिकार.
बेकार कह रहे हो? क्या बेकार कह रहे हो तुम, मोटू और डाक्टर झटका कहां है? उनका क्या बना?
उन का यह बना.
जैसे ही घसीटा राम ने पतलू के कंधे पर हाथ रखा, वह सोने का बुत बन कर वहीं स्थिर हो गया.
बज गया इसका भी बैंड. कानों का बहरा. अब बता जिस्म का सत्यानास हुआ या मिट्टी का ढेर काम की चीज बन गया. मरियल कहीं का. खा-खा कर दुम्बा बन गया होता तो आज कितना लाभ होता इस की हड्डियों के पिंजर से.
माई डीयर सेठ कंगाल चन्द जी, यहां मोटू पतलू आये हैं क्या?
मैंने आम का अचार डाल दिया उन का, दांतो वाले खरगोश. देख ले आ कर
इतना सोना! कहीं मैं अंधा न हो जाऊं इसकी चमक से
इसकी चमक से अंधा नहीं होगा तो मैं इन आँखों में मिर्चों का तेल डाल कर अंधा कर दूंगा.
इतना सोना! घर की हर चीज सोने की!


यह कैसे सम्भव हुआ ?
तुम्हारे घर से उठा लाया, जहां राशन के पीपे में मुट्ठी भर अनाज नहीं है. अब बताओ क्या कह रहे थे तुम ओनासस और जैकी कैनेडी का नाम ले कर और मुझे सेठ कंगाल चन्द का नाम दे कर. आज कौन है दुनिया में सब से धनी ?
आप ही हैं सब से धनी सेठ जी. आप के पास सब से अधिक सोना है
नहीं, अभी थोड़ी कमी है
अभी तुम्हारे एक मन के जिस्म को सोना बनाना है.
मोटू-पतलू, डाक्टर झटका, इन के सोने के बुत कैसे बन गये ?
ए . . .एसे बन गये.
छलांग मार कर घसीटा राम ने चला राम को दबोच लिया.
और जब उसे छोड़ा तो वह सोने का बुत बन चुका था.



कोई बेवकूफ से बेवकूफ उल्लू भी ऐसा नहीं होगा जैसे तुम हो।
मैं कैसा उल्लू हूं यह अभी बताऊंगा. जरा पास को आ.
मैं नहीं आने वाला हूं तुम्हारी चाल में, मैं समझ गया हूं, तुम्हें भगवान ने यह वरदान दिया है कि तुम जिसे छूओगे वही सोने का हो जाएगा.
हां, यह वरदान दिया है, आचार्य चतुरसैन शास्त्री ने आ तू मेरे पास. तेरे जिस्म का दो किलो सोना न बनाया तो कौन सा घाटा आ जाएगा. मेरे पास आज उस से भी अधिक सोना है, जितना ईरान ने अमरीका से वसूल किया.
सोना है, पर सुख तो नहीं है.
सुख और किसे कहते हैं. बताओ, मुझे दुख क्या है. पहले वाले संत ने वरदान मांग कर जो गलती की थी मैं ने उसका तोड़ कर दिया है। मैं ने डाक्टर झटका की कभी भूख न लगने वाली दवा खाई है.
तुम्हारा पहला दुख यही है जिसे तुम सब से बड़ा सुख समझ रहे हो तुम अपने जीवन में कभी जुबान का चटखारा नहीं ले सकते. कोई स्वादिष्ट भोजन नहीं खा सकते लोग तुम्हारे सामने चटखारे ले-ले कर माल उड़ायेंगे. और तुम उन के फेंके हुये पत्ते चाटने का मज़ा भी नहीं ले सकते.
बहुत चाटे हैं जीवन भर. आज तक पत्ते ही चाटता आया हूं. अब और इच्छा नहीं है मुझे.



इस सड़क छाप शेर का असली हाल देखिये आगामी अंक में।

दीवान

चमकती आँख और तीन जासूस

ले. प्रेत नाथ
भाग - ९

'क्योंकि तुम गलत चीज ढूंढ़ रहे हो', राजू बोला 'और जो सामने है वह इतनी साधारण है कि तुम्हें वह दीख ही नहीं रही।'

महिन्दर ने आँख मिचकाई, उसे अभी भी कुछ दिखाई नहीं दिया। 'अच्छा बताओ ऐसी क्या चीज है, मुझे दिखाई नहीं दे रही।'

'उसका मतलब है वहाँ एक दरवाजा है' गस बोला। महिन्दर ने अब देखा, एक मामूली सा दरवाज़े का हैन्डल और दीवार में लगे दरवाजे के चारों ओर की दरार, ये छुपा नहीं था, परन्तु हर कमरे में दरवाज़ा होता है और दरवाज़े का हैन्डल कोई अनोखी चीज़ नहीं है इसीलिये उसका ध्यान उस ओर नहीं गया।

राजू हैन्डल घुमा रहा था, दरवाजा आसानी से खुल गया और लैम्प की लाइट में उन्होंने लकड़ी सीढ़ी देखी जो नीचे को जा रही थी। 'ऐसा लगता है सीढ़ी नीचे तहखाने को जाती है', राजू बोला 'चलो चल कर देखें कहाँ पहुँचते हैं।'

'मेरे दरवाजे खुले छोड़ देना', महिन्दर बोला 'मुझे अपने पीछे बन्द दरवाजे बहुत बुरे लगते हैं।'

राजू सीढ़ी से आगे बढ़ा दूसरे उसके पीछे चले, दोनों ओर की साइडें इतनी करीब थीं कि उनके कंधे उन्हें छू रहे थे। नीचे जा कर राजू रुक गया, एक और छोटे दरवाजे से उनका रास्ता रुका हुआ था, वह आसानी से खुल गया अब ये पत्थर की दिवारों के एक छोटे कमरे में थे, यहाँ की हवा सीली तथा ठंड थी। हम तहखाने में पहुँच गये हैं, चारों ओर लाइट घुमा कर राजू बोला वहाँ उन्होंने बहुत से टेढ़े-मेढ़े शैल्फ देखे जिनका राजू और महिन्दर को कोई मतलब समझ नहीं आया। परन्तु गस ने बताया कि ये शराब की बोतलें रखने के काम आते हैं, 'देखो एक बोतल का टुकड़ा भी पड़ा है। ये हिराशियो दादा जी का निजी शराब रखने का कमरा होगा।'

राजू अचानक सहम गया उसने बत्ती बुझा दी ओर अंधेरा उनके चारों ओर फैल गया।

शअअ! लगता है कोई आ रहा है!

खुले दरवाजे से आगे तहखाने के दूसरे भाग में एक लाइट दिखाई दी, धीमी आवाजें भी सुनाई दे रही थीं।

'चलो यहाँ से भाग चलें', महिन्दर बोला और जल्दी से दरवाज़े के हैन्डल पर झपटा।

वह इतना घबरा गया था कि उसके अचानक जोर के झटके से दरवाज़े का हैन्डल टूट कर उसके हाथ में आ गया। आवाजें और लाइट निकट आ गईं और महिन्दर घबराहट में पकड़ने के प्रयास में कुछ पकड़ने को न पा सका।

वह शराब के तहखाने में कैद हो गये थे!

''हमें मालूम है तुम वहाँ हो''।—

आवाजें और निकट आ गईं। पैरों की आहट शराब के तहखाने के पास आकर बन्द हो गई। एक फ्लैश लाइट की हल्की सी रोशनी दरवाज़े के बाहर से अन्दर आ रही थी।

'हमने शराब के तहखाने की पहले ही तलाशी ले ली है', एक भारी सी आवाज

आई 'फिर वहाँ जाने से क्या फायदा'?

दूसरी एक और रुखी से आवाज़ सुनाई दी, 'हमने आधा घंटा केवल इस शराब के तहखाने की तलाशी में ही लगा दिया था, 'जैक्सन' यदि तुम हम से चलाकी कर रहे हो तो'?

'नहीं मैं चालाकी नहीं कर रहा, कसम से मैं नहीं कर रहा', एक तीखी तथा तेज़ बूढ़े आदमी की आवाज़ सुनाई दी'; यदि वह इस घर में छुपी होती, हमें अभी तक अवश्य मिल जाती। मैं तुम से ठीक कह रहा हूँ इस घर में कोई भी छुपा स्थान नहीं है जो मुझे पता न हो। आखिर मैं मि० वैटसन मेरा मतलब मि० अगस्त का बीस वर्ष तक नौकर रहा हूँ'।

जैक्सन ! महिन्दर को राजू सावधान होता सा प्रतीत हुआ। मि० दूबे ने एक दो नाम लिये थे जैक्सन मि० अगस्त का अकेला ही नौकर था।

'तुम पक्का सोच लो' जैक्सन, पहली आवाज ने कहा।

'हम कंचे नहीं खेल रहे हैं ये बहुत अधिक धन का प्रश्न है और आँख मिल जाने पर तुम्हें तुम्हारा हिस्सा मिलेगा।'

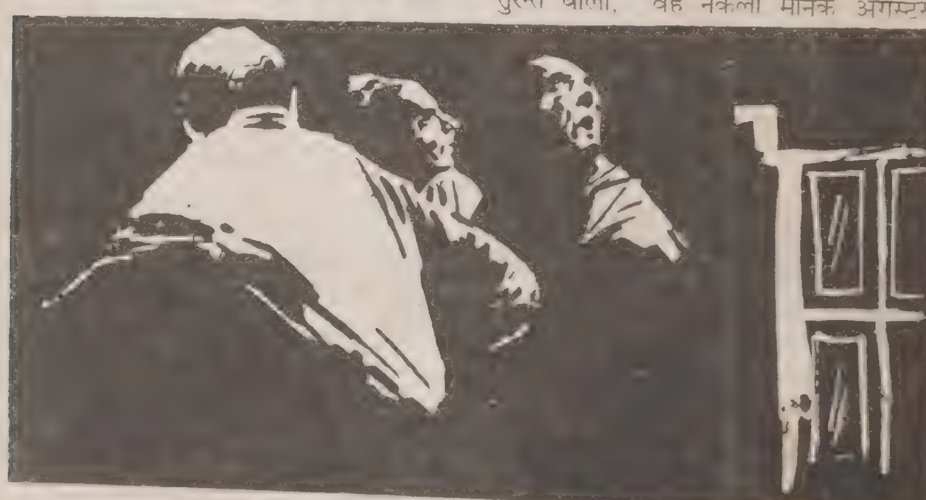
'मुझे जो भी मालूम था मैंने तुम्हें सब बता दिया, सच पूरा-पूरा बता दिया है', जैक्सन ने विनती करते हुए कहा, उन्होंने मेरे और मेरी पत्नी के कहीं बाहर जाने पर छुपाई होगी। मुझे भरोसा नहीं है कि अन्त के दिनों में वे हम पर विश्वास करते थे हालांकि हमने बीस वर्ष तक उनकी वफादारी से सेवा की थी। परन्तु अन्त के दिनों में वे अजीब हरकतें करने लगे, ऐसा लगता था कोई उनका भेद जानने का प्रयास कर रहा हो।

वह बहुत चतुर था। उसने किसी का भी विश्वास नहीं किया यहाँ तक कि आँख जैसे पत्थर को छुपाने में भी पूर्ण सावधानी बरती, दूसरी रूखी आवाज़ सुनाई दी' काश ! मुझे पता होता कि उस नकली पत्थर को अगस्टस की प्रतिमा में छुपाने का क्या कारण था?'

लड़के बहुत ही ध्यान से उनकी बातें सुनने में ऐसे लगे थे कि वे अपनी दुर्भाग्यपूर्ण अवस्था तक को भूल गये थे। यदि इन लोगों को नकली 'चमकती आँख' का पता है तो जाहिर है वे काली मूँछों वाले या तीन बिन्दू के साथी अवश्य हैं, आगे की बातचीत से इस बात का साफ पता चल गया।

'बेचारा ह्यूगो। जब उस तीन बिन्दू वाले ने उसे खत्म किया तो वह इतना गुस्से नहीं था, कह कर भारी आवाज़ वाला हँसा। हँसी की आवाज़ सुन कर महिन्दर के शरीर में डर के मारे फुरफुरी आ गई, उसे तुरन्त तीन बिन्दू के हाथ की छड़ीनुमा चमकती तलवार तथा लाल खून का निशान याद आ गया।

'ह्यूगो को छोड़ो, भारी आवाज़ वाला तुरन्त बोला, 'वह नकली मानक अगस्टस



की प्रतिमा में क्यों छुपाया था, मुझे पूरा विश्वास है वह गलत राह पर डालने के लिये किया होगा। मेरा विचार है मानक यहीं इसी घर में छुपा हुआ है'। 'अगर वह यहाँ है, जनाब तो उसे ढूंढ़ने के लिये पूरा घर तोड़ कर गिराना पड़ेगा, मि० जैक्सन बोले, मैं आपसे कसम खा कर कहता हूँ मुझे किसी भी और ढूंढ़ सकने योग्य स्थान का पता नहीं है। अब कृपा कर मुझे अपने शहर अपनी पत्नी के पास जाने की इजाज़त दीजिये, मैं जो भी कर सकता था कर चुका हूँ, वाकई अब मैं और कुछ नहीं कर सकता।

'हम इस विषय में सोचेंगे, हो सकता है हम तुम्हें जाने की इज़ाज़त दे दें। मुझे इस समय एक व्यक्ति को पकड़ कर पूछताछ करने की इच्छा है, कबाड़ी घर का वह चालाक मोटा, मैंने उसके विषय में पता किया है', और लोगों का कहना है कि उसका दिमाग कम्प्यूटर जैसा है, चाहे वह दीखता मूर्ख ही है। मैं शर्त लगा सकता हूँ कि वह जितना बता रहा है उससे कहीं अधिक उसे मालूम है।

'ठीक है' परन्तु हम किसी तरह भी उसके पास नहीं पहुँच सकते, गहरी आवाज़ सुनाई दी। 'हो सकता है कोई रास्ता हो, चलो ऊपर चल कर अपने अगले कदम का निणय करें'।

'खुफिया कमरे और सीढ़ियों का क्या ख्याल है, हमें उन्हें दुबारा ढूंढ़ना चाहिये उनका अवश्य कोई-न-कोई अर्थ होगा? रुखी आवाज़ ने उत्तर दिया।

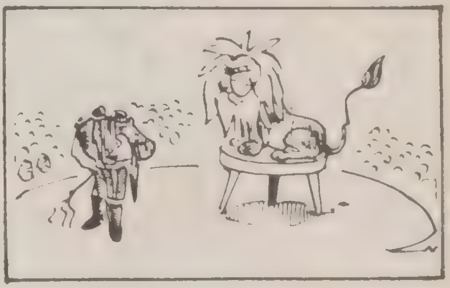
बहुत दिखाई देने वाला, गहरी आवाज़ बोली जैसा कि जैक्सन ने कहा था वे एक साधारण शराब घर में जाने के लिये बनाई गई थीं। 'हाँ वाकई'। मि० जैक्सन बोले बीस वर्ष पूर्व मि० अगस्त ने किताबों की अलमारियाँ बनवाई थीं और यूँ ही मज़ाक के तौर पर एक खुफिया दरवाजेनुमा बनवा दी थी परन्तु वे इसका प्रयोग रात को केवल शराब के कमरे में जाने के लिये करते थे। वे सदा एक बड़े घर में रहने के सपने देखते थे जिसमें खुफिया सीढ़ियाँ हों।

ये सुन लो, गहरी आवाज़ ने कहा चलो, वापिस ऊपर चलें, ये सीला अंधेरा कमरा मुझे उदास कर देता है'।

प्रकाश दूर चला गया तथा तीनों लड़कों को लकड़ी की सीढ़ियों पर चढ़ते पैरों की ध्वनि सुनाई दी। फिर एक दरवाज़ा बन्द होने की आवाज़ आई और एक बार फिर वे शराब के पत्थर के कमरे में अकेले रह गये थे।

फयू'। महिन्दर बोला 'मैं तो समझा था कि वे हमें पकड़ लेंगे काफी सख्त आदमी मालूम होते हैं'।

अरे राम! गम बोला, 'क्या तुमने सुना था वह कैसे हंस रहा था जब वह तीन बिन्दू द्वारा उसके साथी की बात कर रहा था'।



तुम्हारा क्या ख्याल है? राजू 'वे कौन थे? महिन्दर बोला। राजू क्या तुम किसी जादू के असर में हो या और कुछ है?'

'मैं सोच रहा था', राजू बोला 'इन दो लोगों को 'चमकती आँख' के बारे में मि० जैक्सन से पता चला होगा, और इसी कारण मि० जैक्सन की सहायता से उसे 'तीन बिन्दू' से पहले ढूंढ़ लें। महिन्दर ने सिर हिलाया, 'परन्तु हम अब यहाँ से कैसे निकलेंगे हम तो यहाँ फंस गये हैं?

मेरे विचार से जब तक वे न जायें चुपचाप यहीं रहना सुरक्षित होगा। तब तक हम सैलर का दरवाज़ा ढूंढ़ लेते हैं ताकि मौका मिलते ही हम यहाँ से निकल भागें।

राजू आगे चला और उसके पीछे-पीछे चलते वे एक सैलर में जिसकी काफी नीची छत थी में पहुँच गये, उसमें कोई खिड़की नहीं थी। नीचे एक ओर तेल का टैंक बना था जिससे पम्प का चूल्हा जलाया जा सकता

शेष पृष्ठ २४ पर


यह बना ली हमने अपनी मां.
नामी चोर
वार्डन समझेगा यहां हम सो रहे हैं
भला हो इस नमूने का, जो वार्डन की जेब से चाबी ले आया.
चलो, अब निकल चलो. दबे पांव. वार्डन सो रहा है.
मेन गेट पर ताला ही नहीं है. इसे खोलो और सर पर पांव रख कर भाग लो.



इन मासूम चोरों मे मिलिये, आगामी अंक में

पृष्ठ२१से आगे

था। इसके अतिरिक्त वहाँ देखने का कुछ विशेष नहीं था।

अपितु वहाँ लकड़ी की सीढ़ियां थीं जिनके ऊपर एक दरवाज़ा था और वे दबे पांव उनके ऊपर चढ़े। राजू ने सावधानी से दरवाज़े का हैंडल घुमाया। हैंडल घूमा तो परन्तु दरवाज़ा खुला नहीं है, राजू ने धीरे से हिलाया, फिर पीछे हट गया।

इसमें बाहर से कुंडा लगा है' वो बोला हम अन्दर बन्द हो गये हैं। कुछ क्षण के लिये वे सब बिलकुल चुप हो गये। यदि वे सैलर में बन्द हो गये हैं और ऊपर जो लोग हैं व चले गये हैं, तो किसी को क्या पता कोइ और वहाँ आयेगा भी या नहीं ? हो सकता है कई दिन तक कोई न आये या फिर कोइ जब तक न आये जब तक कोई इस घर को गिराने न आये ?

राजू ने चुप्पी तोड़ी।

वह दरवाज़ा भी है जो खुफ़िया सीढ़ियों को जाता है, वह बोला। लेकिन उसका हैंडल तो दूसरी ओर गिर गया है, गस ने ऐतराज किया, 'मैंने उसके गिरने की आवाज़ सुनी थी, वह दरवाज़ा खुलेगा नहीं, क्यों महिन्दर ?

'नहीं मेरे से नहीं खुलेगा'।

'शायद वह मेरे लिये खुल जाये,' राजू बोला

वे सब फिर राजू के साथ शराब के कमरे में वापिस आ गये। महिन्दर ने प्रकाश को जहाँ से हैंडल गिरा था की ओर करके पकड़ लिया। राजू ने अपना रामपुरी चाकू जिसका गर्व था निकाला। उसने उसका एक फल जो कि पेच-कसनुमा था खोला। 'जब किसी साधारण दरवाज़े का हैंडल नहीं होता,, तो अकसर पेचकस से उसके ताले को घुमाया जा सकता है, राजू ने बताया, उसने जहाँ हैंडल लगा रखा था उस में पेचकस डाला, पेचकस भीतर के ताले के अन्दर फंसा कर राजू ने पेचकस घुमाया, ताला घूमा और दरवाज़ा खुल गया।

'ये एक आसान गुर है, परन्तु इसे मुसीबत के समय जानने से लाभ होता है, राजू बोला और वे सीढ़ियों के निचले छोटे भाग में घुसे।

उसके दरवाज़े के बाहर आते ही उसकी आँखों में बत्ती की तेज़ रोशनी पड़ी। रोशनी इतनी तेज़ थी कि राजू की आँखें एक दम चुँधिया गईं, और उसे कुछ क्षण तक कुछ भी दिखाई नहीं दिया।

'बहुत अच्छे ! मोटी तथा गहरी आवाज़ ने जोर से कहा। हमें पता चल गया था कि तुम यहाँ हो क्योंकि हमने अभी बाहर पड़ी तुम्हारी साइकिलें देखी हैं। अब ऊपर आ जाओ और सुनो चुपचाप आना, यदि तुम्हें जान प्यारी है तो !'



राजू के साथ सख्ती

राजू ने चिल्लाये हुए आदेश की ओर ध्यान नहीं दिया, वह झुक कर दरवाज़े के हैंडल और शाफ्ट जो कि वहीं कहीं गिरे थे को ढूंढने लगा। और जैसे ही वह मुड़ा, फ़र्श पर गड़बड़ाते हुए उसने खुले दरवाज़े को झटके के साथ कस कर बन्द कर दिया।'

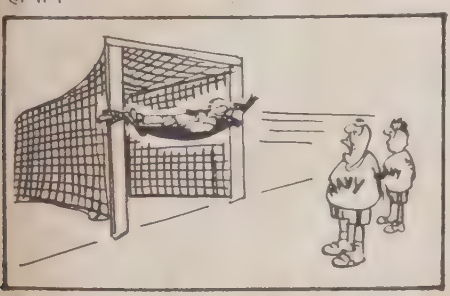
दो आदमी पहले से ही उसकी ओर बढ़ रहे थे। 'चार्ली उसे पकड़ लो।' गहरी आवाज़ ने कहा, 'वह मोटू है! हम उससे बात करना चाहते हैं'।

राजू के पास मोटा कहलाने के लिये रोष दिखाने का समय ही न था मजबूत हाथों ने उसकी बाहें कस कर पकड़ लीं, एक ही क्षण बाद कमीज के गले से पकड़ कर उसे सीढ़ियों से ऊपर ले जाया जा रहा था। शराब के कमरे में महिन्दर और गस ने धूम धड़ाम तथा दोनों आदमियों द्वारा की गई हां हूँ सुनाई दी जैसे वे राजू को सीढ़ियों के ऊपर ले गये। वे दोनों एक दूसरे का मुँह ताकने लगे!

'उन्होंने पहले जासूस को पकड़ लिया', महिन्दर ने घबराकर कहा।

'वह उनसे अच्छा पंगा ले रहा है', गस ने कहा जैसे उसने एक आदमी के कराहने की सी आवाज़ बाहर से सुनी।

ठीक उसी समय, झड़प की आवाजें बन्द हो गई। उन्होंने राजू की दबी सी आवाज़ सुनी, अच्छा जनाब मैं ठीक से चलता हूँ आप मुझ से कहीं ज्यादा लोग हैं और झड़प करने से जो कुछ होना है उससे देर ही होगी।



'हां! तुम्हारा क्या ख्याल है'? रुखी आवाज़ ने पूछा।

गहरी आवाज़ ने उत्तर दिया 'वह इसलिये हार मान रहा है क्योंकि वह समझ गया है कि वह जीत नहीं सकता'। अच्छा मोटू उन सीढ़ियों से ऊपर चढ़ो, जरा भी गड़बड़ की तो तुम्हारा सिर फोड़ दूँगा।'

'और वह दूसरे दो लड़के कहाँ हैं?' रुखी आवाज़ ने पूछा।

'उन दोनों को बन्द रहने दो, हमें तो इस लड़के से ही बात करनी है', गहरी आवाज़ ने उत्तर दिया।

महिन्दर और गस ने शराब के कमरे का बाहर का कुंडा बन्द करने की आवाज़ सुनी जिससे वह समझ गये कि उन्हें इस कमरे में कैद कर दिया गया है, कुंडा बन्द करने वाले के पैरों की आहट लड़कों ने सीढ़ियों से ऊपर जाने के बाद ऊपर के कमरे में सुनी।

'उसने आत्म सम्पर्ण कर दिया', गस बोला।

'क्योंकि उसे पता है कि वह दोनों को नहीं हरा पायेगा', महिन्दर ने राजू का पक्ष लेते हुए कहा।

'इस बीच वह ऊपर कैद है और हम यहाँ कैद हैं', गस बोला दोनों दरवाजों में कुंडे लगे हैं और हमारे लिये बाहर निकलना असम्भव है।

'राजू हमें किसी न किसी तरह बाहर निकाल लेगा,' महिन्दर ने गस को आश्वासन दिया।

राजू उधर किसी प्रकार भी अपनी कुछ सहायता नहीं कर पा रहा था दूसरों की सहायता का तो सवाल ही नहीं उठता था मजबूत हाथों द्वारा उसकी बाहें कमर के पीछे मरोड़ कर पकड़ी हुई थीं तथा उसे घर के रसोई घर की ओर ले जाया जा रहा था जहाँ घर में पाई जाने वाली एकमात्र टूटी सी कुर्सी पड़ी थी।

गहरी आवाज़ वाला नाटा तथा कुछ मोटा था, रुखी आवाज़ वाला लम्बा चौड़ा व्यक्ति था। दोनों ने बड़े-बड़े चश्मे तथा काली मूँछों वाले के समान ही बदला हुआ भेष था। जाहिर था कि ये सब एक ही गिरोह के लोग थे।

गहरी आवाज वाले ने राजू को कुर्सी के पास ले जाकर उसे जबरन कुर्सी पर बैठा दिया।

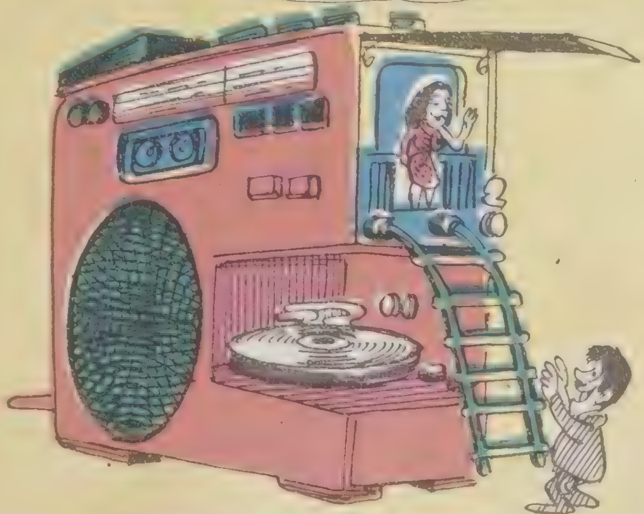
शेष पृष्ठ ५२ पर

टू-इन-वन से आगे



आज देश में दौर टू-इन-वन का है जिसमें रेडियो और टेपरिकार्डर एक ही सैट में होते हैं। खाली ट्रांजिस्टर का जमाना गया। सभी कम्पनियां टू-इन-वन के नये-२ डिजायन निकालने में लगी हैं। आदमी किसी चीज़ से संतुष्ट नहीं रहता वह कुछ ना कुछ नया जोड़ने में लगा ही रहता है। कुछ हाथ इसमें कम्पनियों का है जो सेल बढ़ाने के लिये कुछ-न-कुछ नया फीचर जोड़ते ही रहते हैं—टू-इन-वन से आगे चलें।
अब थ्री-इन-वन भी चलने लगे हैं। जिसमें रेडियो, टेपरिकार्डर के अतिरिक्त रिकार्ड प्लेयर भी है।
फोर इन वन
विदेशों में फोर-इन-वन भी निकल गये हैं जिसमें टी.वी. भी होता है।
इससे आगे क्या निकलेगा . .एक कल्पना—
फाइव-इन-वन
इसमें चार चीज़ों के इलावा पांचवीं चीज क्या होगी ? लीवर दबाया एक पल्ला खुलेगा और अन्दर लाल जोड़े में सजी मेहंदी रचाये दुल्हन बैठी होगी। भविष्य में शादियां शायद इसी प्रकार होंगी।

सिक्स-इन-वन



आदमी बीबी से शीघ्र ऊब जाता है अतः कोई जापानी कम्पनी ऐसा सैट बनायेगी जिसमें दुल्हन के अलावा दूसरी ओर एक गर्ल फ्रैंड का भी प्रबन्ध होगा। बीबी से बोर हो गये तो दूसरी तरफ आ कर बैठ गये।

सैवन-इन-वन



यह भारतीय मॉडल होगा इसमें सैट के पीछे की तरफ आपको सुखी बनाने का प्रबन्ध होगा। अर्थात् नसबंदी कैम्प लगा हुआ होगा। आखिर सिक्स-इन-वन व फाइव-इन-वन की कृपा से आपके बच्चे भी तो काफी हो गये होंगे।

खेल खेल में

एक पहेली

नाम जहीर अब्बास

जहीर अब्बास उन चन्द क्रिकेटरों मे से है जिनका खेल एक पहेली है। एक दिन तो वह अपने प्रशंसकों को अपने खेल से गदगद कर दें, दूसरे ही दिन उन्हें अपने बाल नौंचने पर मजबूर कर दें।

उन्हें लोग ऐशिया के ब्रैडमैन के नाम से पुकारते हैं। उनका खेल ही इतना सहज, सुन्दर, समतल व मंजा हुआ है। उन्हीं का एक दूसरा पहलू है जब वे लगातार अनाड़ी-बल्लेबाज की तरह अटपटे शाट खेल कर आऊट होते रहते हैं जैसे पैविलियन लौट आने की जल्दी हो। जहीर अब्बास का खेल जीवन ऐसी ही रहस्यमय धूप व छांव का एक सिलसिला है। इतने प्रतिभाशाली बल्लेबाज के साथ ऐसा क्यों है कोई खेल समीक्षंक नही जान पाया।

कुछ लोग उनका अत्यधिक अंधविश्वासी होना ही इसका कारण मानते हैं। जहीर पूर्णतया धार्मिक आस्था वाले व्यक्ति हैं। पाचों नमाज नियम पूर्वक पढ़ते हैं फिर भी ....। चश्मे और कांटेक्ट लैंसों को बार-बार अजमाते है। चश्मों के साथ रन न बने तो कांटेक्ट लैंस लगा लेते हैं उनसे भी रन न बने तो फिर वापिस चश्मों पर।

इस समय इनकी आयु ३४वें वर्ष में चल रही है। कई प्रथम श्रेणी मैचों मे श्रेष्ठ प्रदर्शन के बाद १९६९-७० मे जहीर अपना प्रथम टैस्ट मैच कराची मे न्यूजीलैंड के विरुद्ध खेले जिसमें उन्होंने १२ व २७ रन बनाये। चयनकर्ता उनके प्रदर्शन से संतुष्ट नही हुये। बाकी के दो टैस्ट मैचों के लिये उनका चयन नहीं किया गया। उसके बाद घरेलू प्रथम श्रेणी मैचों मे उन्होंने धुआंधार रनों का अम्बार लगा दिया। परिणाम स्वरुप वे १९७१ मे पाकिस्तानी टीम के इंगलैंड टूर में शामिल थे। एजबैस्टन के प्रथम टैस्ट में जहीर ने २७४ रन एक ही पारी में बटोर कर सबका दिल मोह लिया। पाकिस्तान ने उस पारी में ६०८ रन सात विकेटों पर बना पारी समाप्त की। पाकिस्तान यह मैंच जीतता जीतता रह गया। परन्तु तीसरे ही टैस्ट मैंच मे जब पाकिस्तान को जीत के लिये केवल २३१ रन बनाने थे, पहला विकेट गिरने पर जहीर आये। टीम की सारी आशायें उन पर केंद्रित थीं। लेकिन जहीर ने आते ही ईंलग वर्थ की गैंद पर अविश्वसनीय ढंग से बल्ला घुमाया और कैच दे दिया। पाकिस्तान २५ रनों मात्र से मैच हार गया।

जहीर ने गलाऊसेस्तर शायर काऊंटी के लिये खेलना शुरु किया। १९७१-७२ में वह शेष विश्व की टीम के साथ आस्ट्रेलिया के विरुद्ध खेले। इसी शेष विश्व एकादश में सुनील गावस्कर भी थे।

१९७६ वर्ष में अपनी काऊंटी के लिये रनों का ढेर लगा दिया। यहां तक कि इंगलिश गैंद बाज जहीर के नाम से ही खौफ खाने लगे। १९७१ वर्ष के अंत में पाक टीम ने न्यूजीलैंड व आस्ट्रेलिया का दौरा किया। यहां जहीर ने सबको निराश किया। न्यूजीलैंड के विरुद्ध पांच पारियों में मात्र ३५ रन बनाये। आस्ट्रोलिया के विरुद्ध उनका सर्वोच्च स्कोर ५१ रनों का रहा। १९७२-७३ में इंगलैंड मे आई टोनी लूई की टीम के विरुद्ध उनका चयन प्रथम टैस्ट के लिये नहीं हुआ। बाद के दो टैस्टों मे उन्हें अवसर दिया गया लेकिन उन्होने २४ से अधिक रन एक बार भी नहीं बनाये।

१९७४ मे एक अवसर उन्हें और मिला जब पाक टीम इंगलैंड के दौरे पर गयी। ओवल के अंतिम टैस्ट मे जहीर फिर चमक उठे। उन्होंने ४१० गैदों पर २४० रन बनाये।

इसके पश्चात वे फिर धुंधला गये। पाकिस्तान दौरे पर आई वेस्ट इंडीज व न्यूजीलैंड की टीमों के विरुद्ध दस पारियों में कुल १४६ रन बनाये। १९७६-७७ के आस्ट्रेलिया टूर पर जहीर फिर खिली धूप मे आये। उन्होंने ८५व १०१, ९० व ५८ प्रथम दो टैस्टों में बनाये। १९७८७९ में पाकिस्तान में भारत के विरुद्ध जहीर ने जो जौहर दिखाये उन्हें तो यहां दोहराने की आवश्यकता नहीं। आप सब जानते हैं। लाहौर में बनाये २३५ नांट आऊट तो याद होगा ही। उसी वर्ष पाक टीम ने न्यूजीलैंड व आस्ट्रलिया का दौरा किया। इसमें वे न बहुत चमके न बिल्कुल अंधेरे मे आये।

फिर आया पाकिस्तान का भारत भ्रमण १९७९-८० का। यह दौरा जहीर के लिये अत्यन्त निराशाजनक रहा। प्रथम पांच टैस्टों में केवल एक अर्धशतक बना पाये। छठे टैस्ट में वे खुद हट गये।

उसके बाद १९८० में आस्ट्रलियाई टीम पाकिस्तान आई। पाकिस्तान श्रृंखला तो जीत गय। पर जहीर विशेष कुछ न कर पाये। हाल में समाप्त हुये वेस्टइंडीज के विरुद्ध श्रृंखला भी जहीर के लिये अच्छी नहीं रही। अब प्रश्न यह है क्या जहीर फिर छांव से खिली धूप मे आयेंगे?

समाचार पंजीयन (केन्द्रीय) नियम १९६६ के ८ व नियम (संशोधित) मे सम्बन्धित प्रेस और पुस्तक अधिनियम की धारा १९-डी की उपधारा (बी) अन्तर्गत अपेक्षित दिल्ली के दीवाना तेज साप्ताहिक नामक पत्र के स्वामित्व तथा अन्य बातों का व्यौरा।

(१) प्रकाशन स्थान : दिल्ली

(२) प्रकाशन की आवर्तिता : साप्ताहिक

(३) मुद्रक का नाम : पन्नालाल जैन
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : १२२८, वकीलपुरा, दिल्ली-६

(४) प्रकाशक का नाम : पन्नालाल जैन
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : १२२८, वकीलपुरा, दिल्ली-६

(५) सम्पादक का नाम : विश्वबन्धु गुप्ता
राष्ट्रीयता : भारतीय
पता : ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।

(६) उन व्यक्तियों के नाम और पते जो समाचार पत्र के स्वामी और भागीदार या कुल पूंजी के एक प्रतिशत के अधिक के शेयर होल्डर हैं। दि डेली तेज प्राइवेट लि०, नया बाजार, दिल्ली-६।

१. तेज एन्डोमेण्ट ट्रस्ट, बर्न वस्टन रोड, दिल्ली-६
२. श्रीमती रक्षा सरन, नटकॉफ हाउस, दिल्ली।
३. मेजर जनरल हिज हाइनेंस नवाव सर सैय्यद रजा अली खां बहादुर हूर और हाइनेंस रियासत जमानी बेगम खास बाग रामपुर।
४. राय बहादुर बनारसी दास एण्ड कम्पनी प्राइवेट लि०, सदर बाजार, अम्बाला छावनी।
५. मे० बी० एम० हरीचन्द कपूर एण्ड सन्स, कोहिनूर सिनेमा, राटेंड रोड, दादरा बम्बई।
६. मे० बिहारी लाल बैनीप्रसाद महालक्ष्मी मार्केट, चांदनी चौक, दिल्ली।
७. लाला कृष्ण दत्त, १३ बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली।
८. मे० अपर इण्डिया शुगर मिल्स लि० खतौली।
९. श्री विश्व बन्धु गुप्ता, ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१०. श्री विजय कुमार १७, बाराखम्भा रोड, नई दिल्ली।
११. श्री धर्मपाल गुप्ता, कॉटेज नं० ९, ओबराय एपार्टमेन्ट अलीपुर रोड, दिल्ली-११०००६।
१२. श्री रमेश गुप्ता, कॉटेज न० ९, ओबराय एपार्टमेन्ट, अलीपुर रोड, दिल्ली-११०००६।
१३. कुमारी मंजुल गुप्ता, ५ टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१४. श्री सतीश गुप्ता, ५, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली।
१५. श्री प्रेम बन्धु गुप्ता, डी-८५४, न्यू फ्रेन्डस कालोनी, नई दिल्ली-११००६५।
१६. श्रीमती सोनादेवी गुप्ता, ५, टॉलस्टाय मार्ग, नई दिल्ली

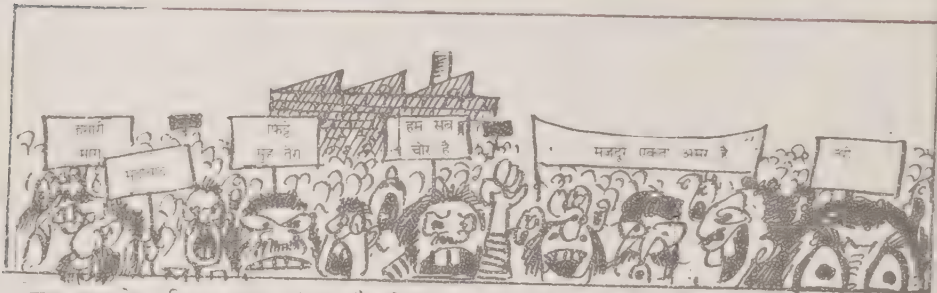
मैं पन्नालाल जैन घोषित करता हूं कि मेरी जानकारी के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

पन्नालाल जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर

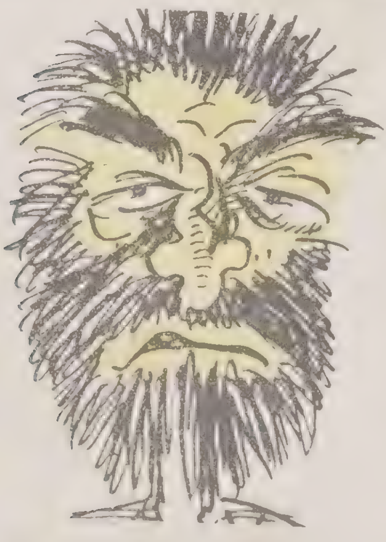
१-३-१९८१

मार्च का महीना आ गया और साथ ही कंपनी वाले अपने अपने वित्तीय वर्ष के बैलेंसशी बनाने में लग गये। यानी साल भर के आय और व्यय का लेखा-जोखा। कंपनी वाले त खैर बनाते ही रहेंगे हमने इस बार सोचा कि कंपनियों के साथ यूनियनें भी तो जुड़ी होती हैं वह भी अपना बैसेंसशीट बनाती होंगी। उनका बैलेंसशीट कैसा होगा वह यहां प्रस्तुत है।

हाय-हाय यूनियन

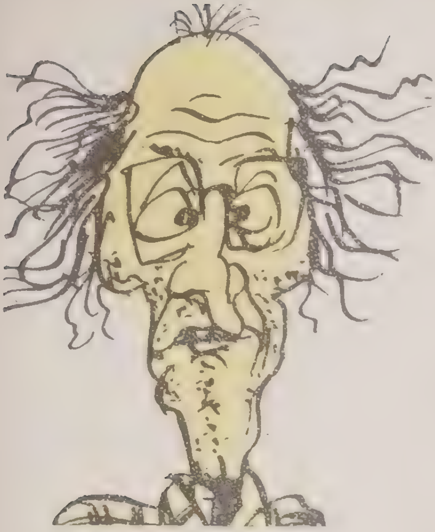


हाय हाय ट्रेडयूनियन, बाजा टॉयज फैक्ट्री के २७ मजदूरों की यूनियन है। भारत गरम देश होने के कारण सुस्त, काहिलों व कामचोरों का देश है। किसी तरह काम टाल कर घर जा कर बीबी से मेथी क पकौड़े तलवा कर चाय से चबाना कर्मचारी का मुख्य उद्देश्य है। और काम से छुट्टी का सबसे अच्छा बहाना है हड़ताल। यही कारण है कि जब भी तीन भारतीय कहा इकट्ठे हो जायें तो उनमें से दो मिल कर यूनियन बना लेते हैं। हाय-हाय एक ऐसी ही यूनियन है और मजदूर के हड़ताल व दंगे फसाद पर उकसाने के अपने महान काम में जुटी है। एक बार तो इस यूनियन ने केवल इसी बात पर हड़ताल करवा दी कि मैनेजर के कमरे से एक मक्खी आकर यूनियन सैक्रेटरी की नाक पर क्यों बैठी।



यूनियन प्रेसिडेंट

यूनियन प्रेसीडेंट कामरेड दड़ियल सिंह बचपन से ही नेतागीरी के गुण लेकर पैदा हुए थे। घर में मां बाप को लड़ाते, स्कूल में अपने साथियों से लंच बाक्स छीन कर खाना खाकर पेट भरते। परीक्षा में नकल करते पकड़े गये व निकाले गये। कुछ सप्ताह एक गली में गुंडागीरी भी की। बचपन से ही हराम की खाने की आदत पाले हैं। इन्हें आगे चल कर बहुत आगे जाने की आशा है। देश का भट्ठा इन्हीं के कर कमलों द्वारा बैठाया जायेगा।



यूनियन सेक्रेटरी

सेक्रेटरी फुम्मन सिंह तीसरी जमात तक पढ़े हैं लेकिन उन्हें दस से आगे की गिनती नहीं आती। बेहगी आंख वाले हैं। लगातार दस वर्ष से लंच में छोले भटूरे खाते आ रहे हैं इसलिए पेट में कब्जी की शिकायत रहती है। घर में बीबी है और आठ बच्चे हैं। बीबी इनसे ऐसा ही व्यवहार करती है। यह पति न हों गली के कुत्ते हैं। यही कारण है कि यह अपना सारा समय यूनियन की सेवा में लगाते हैं।

बैलेंसशीट वर्ष १९८०-८१

हाय-हाय ट्रेड यूनियन, राज टायज फैक्ट्री

आय ब्यौरा

सम्पत्ति —	रु. पैसे
एक टेबल व दो कुर्सियां:	
एक दो टांग वाली, दूसरी तीन टांग वाली	२१.००
लाल झंडे १२	१२.००
चंदे की संदूकची	४.००
कुल:	३७.००.

नकद आय —	
वर्करों से चंदा लिया	११७३.००
फर्श पर पड़े मिले	००.६०
कैंटीन वाले ने दिये, कैंटीन में दंगा-फसाद व **कप** प्लेटों पर दया रखने के लिए दिये	५०.००
कुल संपत्ति चल-अचल	२६ .

व्यय

हड़ताल के लिए पोस्टर छापे	२५.००
बंबई से आये कामरेड को मुर्गा खिलाया,	

बोतल पिलाई और कैब्रे डांस दिखाया	२००.००
नारे लगा कर गला बैठने पर गरारे करने की दवाई ली	७५.००
भूख हड़ताल पर बैठे कामरेड के लिए फूल मालाएं	३५.००
भूख हड़ताल पर बैठे कामरेड को रात को चुपके से समोसे खिलाये	४०.००
मांगों के लिए तख्तियां लिखवाई	५०.००
यूनियन से सैक्रेटरी को खर्चे के लिए दिये	५००.००
यूनियन लीडरों की दाड़ियों में लगाने के लिए तेल लिया	७५.००
बहस के समय यूनियन मैम्बरों के मेज पर मुक्के मारने से आई सोजिश की सिकाई और नसों की मालिश	२०.००
मैनेजर पर फैंकने के लिए टमाटर व अंडे लिए	१३०.००
नारे लिखने के लिए ब्रुश व स्याही	५०.००
फुटकर खर्च	५०.००
कुल व्यय	१२५०.००
फर्नीचर के मूल्य में घटौतरी	११.००
	२१६१.००
घाटा:	कुल ४.

मैं यूनियन का सैक्रेटरी टटपूंजिया राम प्रमाणित करता हूं कि उपरोक्त जानकारी सही है।

मैंने हिसाब किताब की पूरी जांच की। क्योंकि यूनियन वाले मेरा सिर फाड़ने और घर को आग लगाने की धमकी दे रहे है। अतः मैं प्रमाणित करता हूं कि विवरण सही हैं।

हस्ताक्षर

आडिटर

यूनियन मैम्बरों के नाम यूनियन के लीडरों का संदेश

भाइयां,

हमने १९८० वर्ष में दो बार हड़ताल कर के दिखा दिया कि हम भी कुछ कर सकते हैं। हालांकि पुलिस के डंडों से हमें कुछ चोटें आइ। पूंजीवादी सरकार की पिट्ठू पुलिस को इसका फल भुगतना पड़ेगा। उन्हें नर्क में जली हुयी रोटियां मिलेंगी। हमारे एक कामरेड ने भूख हड़ताल की और हमेशा की तरह नाकाम रहा। दुःख तो यह है कि अखबार वालों ने मंत्री के हाथ से संतरे के जूस का गिलास लेकर हड़ताल तोड़ता हुआ उनकी फोटो नहीं छापी।

हमें पूरी आशा है कि नया वर्ष हमारे लिये उज्ज्वल होगा। राहों में हड़ताल और अनशनों के फूल खिले होंगे।

मजदूर एकता अमर रहे।

कामरेड दड़ियल सिंह
कामरेड नारा चंद
कामरेड काम रोको चंद
कामरेड टटपुंजिया राम

३१-३-८१

नये वर्ष के लिये हमारी महत्वाकांक्षी योजना में

हम अपने आफिस की तीन टांग वाली कुर्सी में चौथी टांग लगवायेंगे। क्योंकि यूनियन सैक्रटरी की शिकायत है कि उस पर एक तरफ भार डाल कर बैठते-२ उनका बॉडी बैलंस अपसेट हो रहा है। वह तीन बार इसी कारण साइकिल पर से गिर चुके हैं।

जूतों का हार

नये वर्ष में कम से कम एक बार यूनियन मैनेजर के गले में जूतों का हार पहनायेंगी। कृपया मैम्बर अपने पुराने जूते फेंकने की बजाय यूनियन दफ्तर में जमा करें।

यूनियन के दफ्तर को साऊंड प्रूफ बनाया जायगा। यूनियन की मीटिंगों में जो गाली गलौच होती है वह मैनेजमैंट तक न पहुँचे।

यूनियन के मैम्बरों को क्रिकेट ग्राऊंड में ले जाकर फॉस्ट बॉलिंग की ट्रेनिंग दी जायेगी ताकि हड़तालों के समय वह सही निशाने पर अंडे व टमाटर फैंक सकें।


सवाल यह है?
सवाल यह है? मेरे पिता जी निर्णय नहीं ले पा रहे हैं कि वह गाय लें या ट्रैक्टर?
वह गाय से खेत जोतेंगे तो पागल से लगेंगे।
जवाब हाजिर है
पर वह ट्रैक्टर का दूध दोहेंगे तो और भी पागल लगेंगे
?
सवाल यह है?
तुम अपनी कार के लिये बिल्कुल नन्हे बालक की मिसाल क्यों देते हो?
जवाब हाजिर है
क्योंकि यह चलती नहीं.
सवाल यह है?
दिन-ब-दिन हर चीज़ ऊपर जा रही है. कोई नीचे आती नज़र नहीं आती!
दैनिक दीवाना
बाजार के भाव
जवाब हाजिर है
पापा, मेरी स्कूल की रिपोर्ट



जी लाजवाब है?
सवाल यह है?
तुम क्या जवाब दोगे, अगर कोई पूछे कि तुम्हारी मम्मी का फ़र का कोट किस जानवर की देन है?
जवाब हाजिर है
जी की देन है
सवाल यह है?
मैं इतनी देर से बोल-बोल कर झक मार रही हूं, तार बाबू की नौकरी में क्या यही सिखाया गया है कि पत्नी की किसी बात का जवाब न दो, आखिर तुम सोच क्या रहे हो?
जवाब हाजिर है
मैं हिसाब लगा रहा हूं कि तुम अपने मैके से मुझे इतने शब्दों का तार देतीं तो तुम्हारे बाप के ३७८ रुपये और ८० पैसे लग जाते.
?
सवाल यह है?
मैं तुम्हारी किताब पढ़ने के लिये ले जाऊं तो तुम जान जाओगे ना कि किस किस्म के लोग किताबों से प्यार करने वाले होते हैं?
जवाब हाजिर है
जी हां, जो मांगी हुई किताब वापस नहीं करते



मुकेश कुमार गुप्ता—खुर्जा (उ० प्र०) : डीयर गरीब चन्द जी, मेरे दादा जी ने श्राप के नाम एक लाख रुपये श्रौर एक बिल्ली बसीयत की है। क्या श्राप बतायेंगे कि उसे लेने कब श्रा रहे हो ?

उ० : मैंने एक श्रलसेशियन पिल्ला पाल रखा है जब वह बड़ा हो जायेगा तो हम दोनों श्रा जायेंगे।

प्रहलाद गोनेवार—खामगांव : गरीब चन्द यदि मैं जीनत श्रमान से शादी करूँ तो कैसा रहेगा ?

उ० : बहुत श्रच्छा रहेगा। वह मुझ से कह भी रही थी कि उसे एक घरेलू नौकर की जरूरत है।

मो. जहांगीर—रांची (बिहार) : गरीब चन्द जी, श्रापके बिरादरी वालों की श्राबादी दिनों दिन बढ़ती जा रही है। क्या सरकार इसे रोकने के लिए कुछ उपाय करेगी या नहीं ?

उ० : सरकार तो श्रपनी तरफ से जोर लगाती ही रहती है लेकिन हम उसकी एक नहीं चलने देते। जिस तरह इश्क पर जोर नहीं इसी प्रकार हम पर भी किसी का जोर नहीं।

वीरेन्द्र कुमार आचार्य—रक्कड़ : डियर अंकल, क्या आप मुझे दीवाना के मुख्य पात्र घसीटा राम से मिलवा सकते हैं ?

उ० : श्राप श्रभी बच्चे हैं। पहले श्राप मिलने का बीस साल का तजुर्बा हांसिल कीजिये फिर वह श्राप से मिलेगा।

लक्ष्मी चन्द माहवानी—मैहर (सतना) : गरीब चन्द जी मैं श्रापसे होली खेलना चाहता हूं श्राप कैसे मिलेंगे ?

उ० : श्रपने रंग में डूबा हुश्रा।

प्रहलाद जसवानी कृष्ण कन्हैया—मण्डला : गरीब चन्द जी सच्ची खुशी कब हासिल होता है ?

उ० : खुशी तो खुशी है। सच्ची झूठी का लेवल तो समाज के नियम व कानून श्रपनी सुविधानुसार उस पर लगाते हैं।

अनिल-कमला दुर्गा सिकन्दर—रायपुर : गरीब चन्द जी आपकी कुतरने की कितनी स्पीड है ?

उ० : बुलेट मोटर साईकिल का पिस्टन ८०. मील की स्पीड पर जिस गति से चलता है वही मेरी कुतरने की स्पीड है।



सुनीलदत्त शर्मा—दिल्लीकेंट : गरीबचन्दजी, कभी श्रापने श्रपने जीवन में शिकार किया है ? किया है तो कब ?

उ० : मैं तो बस श्रापके सवालों का शिकार करता हूँ श्रौर उसका शोरबा बना कर श्राप को ही खिलाता हूं।

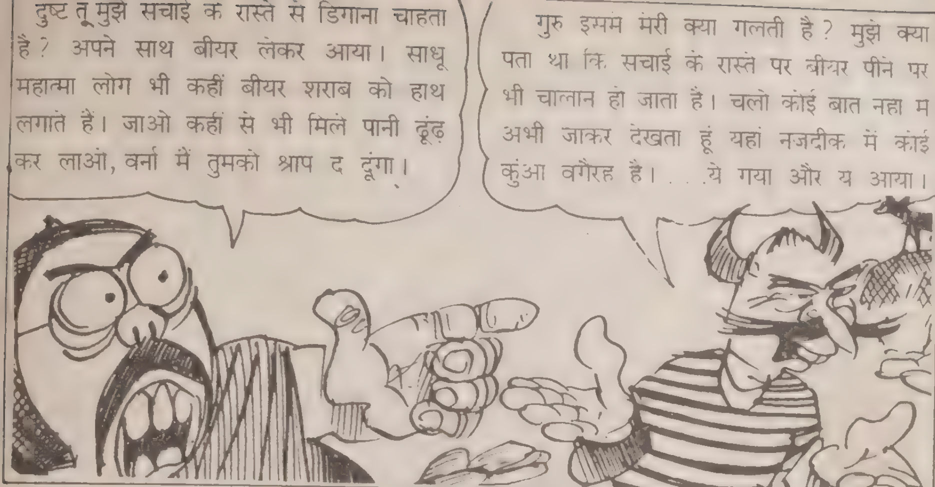
सीतलदास—अमरावती : गरीबचन्दजी श्राप के घर में कुल कितने सदस्य हैं ?

उ० : परिवार नियोजन वाले पूछें तो तीन श्रौर राशन विभाग वाले पूछें तो तेरह।

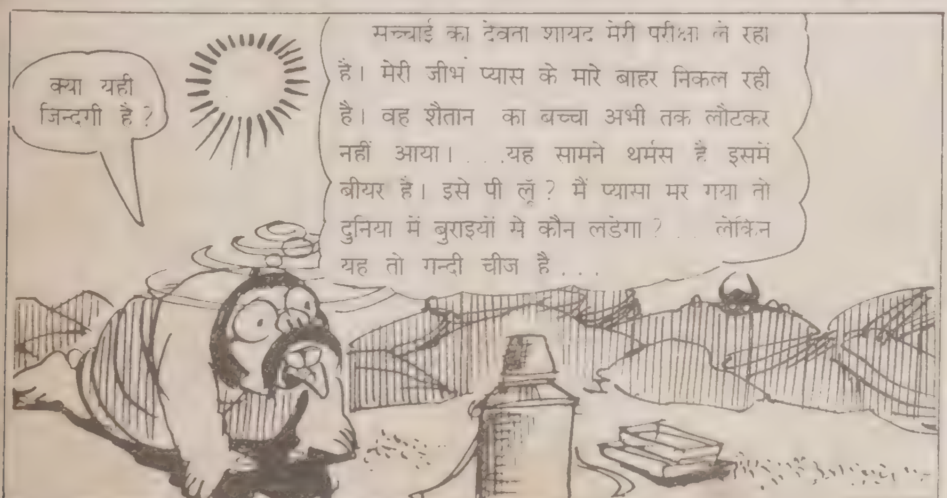
गरीब चन्द की डाक
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२


सिलबिल-पिलपिल
महात्मा व बकरी
पिछले अंक में आपने पढ़ा कि सिलबिल सचाई के मार्ग पर चलने का निर्णय करता है। बकरी के कारण उसका पिलपिल व मकान वालों से झगड़ा होता है तो वह अपनी बकरी लेकर निकल पड़ता है। अब पढ़िये उससे आगे . . .
मैं अपनी बकरी आंटी को लेकर पैदल ही भारत का भ्रमण करुंगा। गांव-गांव शहर-२ जाकर गांधी जी की शिक्षाओं का प्रचार करुंगा, लोगों को फिर से सचाई के रास्ते पर चलने की प्रेरणा दूंगा। अब यही बकरी मेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य होगा।
'मैं इसको अपना दूध पिलाऊंगी और भूखों 'मरने से बचाऊंगी।
तू कौन है। मेरा रास्ता क्यों रोक कर खड़ा हो गया ?
महाराज मैं शैतान हूं। मेरा आदर पूर्वक प्रणाम स्वीकार कीजिये।
प्रणाम ! तू सचमुच ही शैतान है या शैतान तेरा निकनेम है ?
मैं सचमुच ही शैतान हूं महाराज ! दुनिया में सारी बुराइयां फैलाने वाला मैं हूं। राजनारायण तो मेरे दफ्तर का खलासी है।
तू मेरे से क्या चाहता है ?
आपके दर्शन
महात्मा जी बात ऐसी है कि जब से लोगों ने राजनीतिक पार्टियां बनाली हैं तब से मेरा काम बहुत हल्का हो गया है। सारे दंगे फसाद, लड़ाई झगड़ा, मारपीट, फरेब, चार सौ बीसी वही करने लगे हैं। मुझे लगा कि मुझे अब रिटायर हो जाना चाहिये। मैं तो रिटायरमेंट की अर्जी लिख कर भेजने वाला ही था इतने में आपका पता लगा कि आप सचाई व प्यार का पाठ पढ़ाने निकले हैं। सोचा जाते-जाते आपको भी ठिकाने लगा लूं।
शैतान के बच्चे, तू मुझे ठिकाने लगायेगा !
मेरी पूरी बात तो सुनिये पहले। मैं तो आपकी शरण में आया हूं।


अब मैं बुराइयों से नाता तोड़ना चाहता हूं। अगर आपको स्वीकार हो तो आपको अपना गुरू बनाना चाहता हू। सदा अपकी आज्ञाओं का पालन करूंगा। आपका कोई चेला भी तो
ठीक है! आज से मैं तुम्हें चेला बनाता हूं। मैं शैतान को भला मानस बनाऊंगा तो दुनिया से बुराईयां जड से मिट जायंगी। दुनिया में आज तक जो कोई और न कर सका वह मैं कर के दिखाऊंगा।
चेले भूख लग रही है। क्या उपाय किया जाय?
गुरु चिन्ता न करो। सुबह मैं नर्क से आते हुय लंच बॉक्स लेता आया। मुझे पता था कि फक्कड़ बाबा के पास जा रहा हू, पता नहीं खाना मिले या न मिले।
शाबाश
क्या बना कर लाया है?
स्पैशल चीज़ें लाया हूं उस्ताद! तन्दूरी चिमगादड़, कव्वे के मीट के सैंडविच और छिपकली का आचार।
भूख में सात्विक भोजन खाने वाला महात्मा हू। पर हटा ये चीज़ें।
गुरु आपके लिये भी तो लाया हू। दो बड़े-२ पैकट चने भुनवा कर लाया हू। नर्क मे आग जल रही थी बस भुनवा लिये। उसी वक्त मेरे दिमाग मे विचार कि शायद महात्मा जी वैजीटेरियन खाते हो।
शाबाश! ल्या इधर! खाने का मज़ा मात
अरे शैतान के बच्चे! अपना थर्मस इधर ला। चने खाने के बाद प्यास बड़े जोर की लगती है। दोनों पैकट चने के मै खा गया।
गुरु, अपने थर्मस मे पानी थोडे ही है इसमे तो बीयर है। मुझे बीयर पीने की आदत है।


दुष्ट तू मुझे सचाई के रास्ते से डिगाना चाहता है? अपने साथ बीयर लेकर आया। साधू महात्मा लोग भी कहीं बीयर शराब को हाथ लगाते हैं। जाओ कहीं से भी मिले पानी ढूंढ कर लाओ, वर्ना मैं तुमको श्राप दे दूंगा।
गुरु इसमें मेरी क्या गलती है? मुझे क्या पता था कि सचाई के रास्ते पर बीयर पीने पर भी चालान हो जाता है। चलो कोई बात नहीं मैं अभी जाकर देखता हूं यहां नजदीक में कोई कुंआ वगैरह है। . . .ये गया और ये आया।


हो हो हो! देखता हूं यह महात्मा का बच्चा कब तक अपने आप को रोक पाता है। मैं जान बूझ कर चने भुनवा कर लाया था। और यहां कोसों तक कहीं पानी का नाम नहीं मिलता। बीयर से भरा थर्मस उसी के पास छोड़ आया हूं। विधवा रंडापा काट सकती है लेकिन चने खाने के बाद बिना पानी पिये कोई नहीं रह सकता।


क्या यही जिन्दगी है?
सच्चाई का देवता शायद मेरी परीक्षा ले रहा है। मेरी जीभ प्यास के मारे बाहर निकल रही है। वह शैतान का बच्चा अभी तक लौटकर नहीं आया। . . .यह सामने थर्मस है इसमें बीयर है। इसे पी लूं? मैं प्यासा मर गया तो दुनिया में बुराइयों से कौन लड़ेगा? . . . लेकिन यह तो गन्दी चीज है . . .



सिलबिल पिलपिल के कारनामे अगले अंक में पढ़िये

क्यों और कैसे

प्र० : हर व्यक्ति बूढ़ा क्यों होता है?

प्रेम बाबू शर्मा बगीची, पीरजी।

उ० : क्या आपको मालूम है कि प्राचीन रोम में मनुष्य का जीवन काल २३ वर्ष का था? अमरीका में आज से सौ वर्ष पूर्व मनुष्य की आयु ४० वर्ष तक समझी जाती थी।

अधिकतर लोग लम्बी आयु तक जीवित रहना चाहते हैं, कोई भी बूढ़ा नहीं होना चाहता। परन्तु बूढ़ा होना एक ऐसी प्रक्रिया है जो जन्म के साथ ही आरम्भ हो जाती है और पूरे जीवन चलती रहती है।

हम सब को ही मालूम है कि जैसे मनुष्य की आयु बढ़ती है क्या होता है, शरीर की सब क्रिया और प्रतिक्रियायें धीमी हो जाती हैं। मनुष्य की कुछ शक्ति घट जाती है और उसकी इन्द्रियाँ सुस्त हो जाती हैं। मनुष्य का कद और वज़न भी घट जाता है। इन सब के अतिरिक्त आँखें कमज़ोर हो जाती हैं, ऊँचा सुनाई देता है, बाल सफेद हो जाते हैं, ढीली तथा सूखी सी त्वचा हो जाती हैं।

हर व्यक्ति एक से ही समय पर बूढ़ा नहीं होता फिर भी कुछ शारीरिक बदलावों से बचा नहीं जा सकता। इसका कारण ये है कि शरीर के हर अंग और टिशू में बदलाव आता रहता है। उदाहरण के लिये गुर्दे, जिगर पेनक्रियास और तिल्ली के अणु नष्ट होने लग जाते हैं, इसका मुख्य कारण ये है कि रक्त नाड़ियाँ पुरानी हो जाती हैं और वे उतनी अच्छी तरह रक्त तथा खूराक भिन्न अंगों को नहीं पहुँचा पातीं जैसे जवानी में पहुँचाती थीं। थाइरोइड और अन्य ग्रन्थियाँ भी इसी प्रकार विकृत हो जाती हैं।

शरीर का सारा परिसंचरणतन्त्र बदलने लग जाता है और पहले के समान अच्छी तरह काम नहीं कर पाता। इन्हीं बदलावों के कारण हम साँस भी पहले के समान नहीं ले पाते। आँखें, कान हड्डियाँ, जोड़, रक्त, त्वचा, बाल नाखून और दांत सब ही विकृत होने लगते हैं।

खाना पचाने के लिये शरीर से उत्पन्न होने वाले पाचक रसों की उत्पत्ति कम हो जाती है। पेट तथा आँतों का लचीलापन कम हो जाता है नाड़ियाँ कड़ी पड़ जाती हैं और रक्त संचार पहले के समान नहीं हो पाता और इसी कारण वृद्ध लोगों को अपने भोजन को बदलना पड़ता है।



शरीर के ये सब परिवर्तन जैविकि हैं और इन्हें रोका नहीं जा सकता क्योंकि बूढ़े टिशू और अंग वैसा कार्य नहीं कर सकते जैसा वे पहले करते थे। परन्तु सारे अंगों और टिशुओं का परिवर्तन एक साथ नहीं होता। ६० वर्ष के वृद्ध मनुष्य के कुछ अंग ऐसे हो सकते हैं जैसे अस्सी वर्ष के मनुष्य के परन्तु कुछ ऐसे भी हो सकते हैं जैसे ४० वर्ष की आयु वाले के या बीस वर्ष की आयु वाले के हों।

क्यों और कैसे?
दीवाना साप्ताहिक
८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग,
नई दिल्ली-११०००२

समझ गए कि लाला के ऊपर क्रिकेट का भूत सवार हो गया है. खेल क्या होगा? सवाल होगा. पर लड़के लाला से कहते कैसे कि टीम से निकल जाओ, सब कुछ लाला ही तो कर रहे थे. लड़कों ने मजा लेने के लिए लाला की हर बात पर हामी भर दी.

बातचीत के दौरान टीम का कप्तान बनाने का प्रश्न उठा तो लड़कों ने एक स्वर से लाला को टीम का कप्तान बनने को कहा. लड़कों की बात सुनकर तो लाला गर्व से और गोल हो गए.

अब प्रश्न उठा कि मैच, पहले खेला किसके साथ जाए? तो एक लड़के ने पड़ोस के मोहल्ले की क्रिकेट-टीम का नाम बता दिया, इस बात पर सभी ने हां कर दी. अब लाला निकले मोहल्ले के घर-घर से चंदा इकट्ठा करने के लिए, ताकि झटपट खेल का सारा सामान खरीद कर आ सकें.

लाला की बात कौन काटता? दो-तीन घंटे में ही खूब चंदा भी जमा हो गया. और कुछ देर बाद सारा सामान भी बाजार से खरीद कर आ गया. लाला सामान को, यानी बल्ला, गेंद और विकिट आदि को, उन पर हाथ फेर-फेर कर ऐसे देख रहे थे, जैसे कि उस सामान को अपनी मिठाई की दुकान के काउंटर में, रसगुल्ले, बर्फी की जगह सजा लें. पर मजबूरी देखकर कुछ कह न सके, बेचारे लाला.

दूसरे मोहल्ले की टीम के पास, जब कप्तान लाला का मैच खेलने का प्रस्ताव लेकर एक लड़का पहुंचा तो सभी के ठहाके छूट गए, पर यह जानकर भी उन्होंने मैच खेलना स्वीकार कर लिया और अगला दिन ही खेल के लिए निश्चित कर दिया.

दूसरे दिन मोहल्ले के 'प्ले-ग्राउंड' में दोनों टीम निश्चित समय पर आ गईं. दर्शकों की तो कोई गिनती ही नहीं थी. सदा धोती में रहने वाले लाला, आज जब चुस्त पैंट में लोगों को नजर आए, तो सभी हो-हो कर तालियां पीटने लगे. किसी शरारती लड़के ने तो लाला को देखते ही एक सड़ा टमाटर उनके ऊपर उछाल दिया. बेचारे लाला गुस्से से अपनी गंजी चांद पर फैल गया टमाटर का रस पोंछने लगे. फिर तत्काल ही एक कैप का इंतजाम कर, गंजे सिर पर ओढ़ा दी.

'टास' हुआ तो लाला हार गए. इसलिए अपनी टीम को अपने हिसाब से फील्डिंग पर लगा दिया. 'बौलिंग' के लिए उन्होंने सोचा कि क्यों न वह खुद ही पहले गेंद फेंकें? बस लाला गेंद फेंकने के लिए तैयार हो गए. यह बात अलग थी कि उन्होंने आज तक कभी गेंद नहीं फेंकी थी. हां, मैच देखे ज़रूर थे. 'बाल' फेंकने का एक दृश्य याद कर उन्होंने भी वैसा ही करना ठीक समझा.

लाला पहली गेंद फेंकने के लिए कुछ दूर से भागते हुए आए और हाथ को तीन बार एक्टिंग के साथ घुमाकर जैसे ही गेंद फेंकी, तो गेंद ही गायब. मालूम पड़ा कि गेंद आगे की बजाय पीछे का रास्ता तय कर रही थी. 'फील्डिंग' पर तैनात 'बाउंड्री-लाइन' पर खड़े एक लड़के ने गेंद को आगे फेंका.

दुबारा गेंद हाथ में आई तो लाला ने सोचा कि बल्लेबाज के पास से गेंद क्यों न फेंकी जाए? बाइस कदम की दूरी उनको बाइस कोस सी लग रही थी. लिहाजा, लाला इस बार भागे-भागे आए और सामने खड़े बल्लेबाज के एकदम पास आकर बिना हाथ घुमाए, जो गेंद फेंकी तो उसके सिर पर 'भन्न' से बोली. लड़का बल्ला छोड़कर लगा भांय-भांय रोने.

लाला उसे चुप कराते, इससे पहले ही उस लड़के का बाप भीड़ से निकल कर आया और आव देखा-न-ताव बल्ले को उठाकर लाला पर पिल पड़ा. लड़ाई शांत कराते-कराते, लाला पर्याप्त चोट खा चुके थे. मुंह लटकाए, दुबारा क्रिकेट न खेलने की कसमें खाते जब लाला वहां से चले तो पीछे-पीछे लड़कों ने राग के साथ गाना शुरू कर दिया, ''झरबेरी के बेर हैं, कैप्टन लाला जेर हैं.''


फैण्टम-जंगल शहर
बाबाबू, भूतपूर्व डिक्टेटर निर्वासन में . . .
हमारे लोग उस दिन की प्रतीक्षा में हैं जब आप वापिस आओगे 'जनरल'।
हूँ! क्या लुआगा लोकप्रिय है, मेजर ?
शायद अनजाने किसानों के साथ . . .
परन्तु हमारे जैसे जाने-माने लोगों के साथ नहीं . . .
तुम्हारी वापसी विजय होगी . . जैसे सीजर का गॉल से वापिस आना था।
बंगाला मेरा था! वह मेरी मुट्ठी में था, वह खिसक गया था. अब वह खिसक नहीं पायेगा।
क्या बच्चा पैदा हो गया है? तुम से मिल कर खुशी होगी। लूआगा . . .
प्रेसीडेन्ट लूआगा के लिये टेलीफोन
कौन मि० वाकर बोल रहे हैं, ऐक्सीलैंसी।
चलते फिरते भूत के लिये
आपका संदेश मिला. हम आपकी प्रतीक्षा में . हम सब चारों।
सब चारों
क्या तुमने कहा तुम चारों?
हाँ, डिआना, मैं और
एक लड़का और एक लड़की . मां और बच्चे स्वस्थ हैं
क्या आप उन्हें सुन रहे हैं?
हाँ! उनके नाम क्या हैं?
गरल्ल . . . गरल्ल . . .
लडके का नाम किट है। डियाना लडकी का नाम अभी तक चुन रही है. आप कब आ रहे हैं?
!
मैं हमेशा की तरह उस अजीब पहाड़ी पर उतरुँगा . . . क्या कहते हैं उसे?
फैन्टम हैड . . बन्दर आप के साथ. घने जंगल आयेगा
बहुत बढ़िया! बहुत अच्छे! शुक्रवार तक रुकना कठिन हो रहा है . . . नमस्कार . . .
ओह प्रिय . बंगाला के प्रेजीडेन्ट आ रहे हैं और हमारे यहां एक फालतू बिस्तर भी नहीं है।
उन्हें सदा यहाँ ही अच्छा लगता है।


बगाल्ला के राष्ट्रपति भवन में . . . एक षडयन्त्र . . .
बजज . . . बजज
परन्तु हम आपसे कहां सम्पर्क कर सकते है श्रीमान !
कहीं भी नहीं . . . मैं तुम्हारी पहुंच से दूर हूंगा। मेरे पाइलेट कैप्टन लांगू को बुलाओ . . . मैं जाने को तैयार हूं।
'कैप्टन लांगू' तुम्हारे लिये मेरे पास एक संदेश है !
हां ? क्या--आह !
ये !
मेरा पाइलेट 'कैप्टन लांगू' कहां है ?
वह बीमार है श्रीमान, एक वाइरस से—मैं उनकी एवज में आया हूं कैप्टन कोरोट्टा श्रीमान !
अभी तक सब ठीक है, और सब को संदेश दे दो !
ये आखिरी बार हम प्रेजीडेन्ट को देखेंगे !
कैप्टन लांगू, राष्ट्रपति लूआगा के पाइलेट . . .
ये सब क्या है ?
तुम्हें बदल दिया गया है, कैप्टन !
लूआगा समाप्त हो गया है, या तुम हमसे और जनरल बाबाबू से मिल जाओ, नहीं तो तुम्हें भी खत्म कर दिया जायेगा !
क्या कैप्टन लांगू ने तुम्हें इस यात्रा के विषय में समझा दिया था ?
हाँ ! प्रेजीडेन्ट लूआगा, श्रीमान !
लेफ्टीनेन्ट रामास हमारा नेवीगेटर है, श्रीमान् !
मुझे गर्व है, प्रेजीडेन्ट लूआगा श्रीमान् !
धन्यवाद !
मेजर तुमने कहा था मेरे निजी पाइलेट ने तुम्हें यात्रा के विषय में समझा दिया था !
उसने समझा दिया था श्रीमान् !
फिर तुम पूर्व की अपेक्षा उत्तर की ओर क्यों उड़ रहे हो ?
अर-हाँ पूर्व की ओर तूफान है, हम उसका चक्कर काट कर जा रहे हैं, श्रीमान !
लैफ्टीनेन्ट रामास ठीक है न ?
ठीक है मेजर !
दुबारा उन्हें मिलना बहुत ही अच्छा होगा।
चलते चलो, अंह नींद आ रही है, सो लूँ !


राष्ट्रपति लूआगा की प्रतीक्षा फैन्टम चोटी के निकट कर रहे हैं बन्दर पिगमी जहरीले लोग।
हम उनके लिये तैयार हैं. वह कितनी देर तक यहाँ पहुँच जायेंगे ?
कुछ ही घंटों में. हमारा बन्दर उन्हें उतरते ही अपने साथ यहाँ लायेगा।
'डियाना' वह बच्चों के नाम पूछेंगे. लड़का तो 'किट' है. परन्तु लड़की का क्या सोचा ?
वाओ ! क्या है ?
मैंने एक नाम चुन लिया है. मैं तुम्हें बताने ही वाली थी।
फैन्टम इतिहास . .
इतने अधिक सुन्दर नाम हैं तुम्हारी स्त्री पूर्वजों में . . . . नटाला, नवार की रानी, रोसामुण्डा . . .शेकस्पियर की भतीजी
माराबेला,, क्रिस्टीना . . मैंने एक अपनी पुत्री के लिये चुन लिया है।
मैंने तुम्हारी इतिहास में तुम्हारे अनोखे परिवार से अपनी पसन्द का एक चुन लिया है।
वह जो वास्तव में अनोखा है !
वह क्या है ?
ये नाम मैंने अपनी पुत्री के लिये चुना है 'हेलोइस' !
आठवें फैन्टम की पत्नी जिसका विवाह १६८५ में हुआ था ?
'हेलोइस' ? वह बहुत ही सुन्दर है, क्या वह रानी थी ?
कोक्यानिया की रानी थी, रेक्स. ये राज्य अब नहीं है।
परन्तु वह हान्ता जादूगरनी भी कहलाती थी।
FALK & BARRY 0,5
एक जादूगरनी ? तुम उस सुन्दर बच्ची का नाम एक जादूगरनी के ऊपर रखोगे ?
हेलोइस ! बच्ची के लिये कितना सुन्दर नाम है !
किट और हेलोइस
हेलोइस कोक्यानिया की रानी।
बुजुर्ग मौज,, वह रानी थी या जादूगरनी ?
वह दोनों ही थी रेक्स। जब तक हम राष्ट्रपति लुआगा की प्रतीक्षा कर रहे हैं, मैं तुम्हें प्रथम हेलोइस जो आठवें फैन्टम की पत्नी थी के बारे में बताता हूँ
FALK & BARRY 10/6
उन्हें बहुत देर प्रतीक्षा करनी पड़ेगी !
सब हमारे काबू में है, वे सो रहे है !
ZZZZZ
क्रमशः

फिल्म स्टारों के

फिल्म स्टार हर नये वर्ष में कुछ न कुछ संकल्प करने के लिये मशहूर हैं चाहे बाद में वह पूरा हो न हो। १९८१ वर्ष के लिये किसने क्या संकल्प किया इसका हमने शहरी जासूसी करने के बाद पता निम्न दूरकी कौडियां खोज कर निकाली जो आपके सामने प्रस्तुत हैं।



हेमा मालिनी — मैं सरसों का साग बनाना और दही रिढ़क कर लस्सी बनाना सीखूंगी। एक जाटनी को यह आना ही चाहिये। लोहडी के गीत सीखने के लिये पंजाबन मास्टरनी रखूंगी।

धर्मेन्द्र — मैं रिसर्च करुंगा कि सांभर में इमली की जगह गन्ने का रस डाला जाये तो कैसा रहेगा।

अमिताभ बच्चन — अभी कुछ तय नहीं है। दो संकल्प चुने हैं एक जया की सलाह से दूसरा रेखा की सलाह से। किसी दिन जब जया घर में नहीं होगी तो छोटी वाली लड़की से लाटरी खुलवा कर फैसला करुंगा कौन सा संकल्प लागू करना है।

रेखा — १९८० वर्ष ने मुझे नम्बर १ स्थान पर पहुंचा दिया फिल्मी दुनिया में। मैं और ऊपर जाऊंगी एक से ½, ⅓, ¼ . . .

आई एस जौहर — कोई मूर्खता का काम करुंगा। हो सकता है नयी फिल्म बनाऊं।

शत्रुघ्न सिंहा — इस वर्ष दोबारा पूनम से शादी करुंगा। पब्लिसिटी मिलेगी।

राजेश खन्ना — मैं किसी वकील को अपने घर में घुसने नहीं दूंगा, न ही तलाक सम्बन्धी कानून की किताब अपनी अलमारी में रखूंगा।

डिम्पल — मैं सारा वर्ष सोच विचार में लगाऊंगी। सोचने के लिये मेरे पास दो विषय हैं। पहले छः महीने यही सोचने में लगा दूंगी कि कौन सा विषय चुनना है। वह दो विषय है पहले राजेश से तलाक लूं या न लूं। दूसरा है मुर्गी पहले पैदा हुयी थी या अंडा।

पद्मिनी — पिछले वर्ष मैंने प्रिंस चार्ल्स का गाल चूमा था। इस पब्लिसिटी के सहारे मुझे आशा है सफलता मेरे कदम चूमेगी। अगर ऐसा न हुआ तो मुझे और कुछ करना पड़ेगा। पता करना पड़ेगा कि अगली बार चार्ल्स भारत कब आ रहा है?

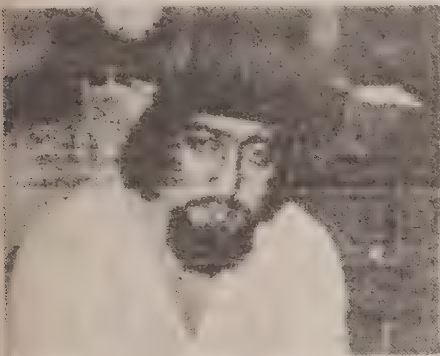
दीप्ती नावल — मैं अपने चमन को गुलजार करुंगी।

राखी — मैं अपना नाम बदल कर कुछ और रखूंगी। जिस पुरुष के पल्ले में बंध जाती हूं वह पता नहीं क्यों मुझसे बहन का व्यवहार करने लगता है।



विनोद खन्ना — भगवान रजनीश के टेपों को चारा काटने की मशीन में डाल कर देखूंगा। उस चारे को खाकर भैंस पूना की तरफ दौड़ेगी या नहीं यह देखूंगा।

नव वर्ष संकल्प



डैनी—अब और फिल्मों का निर्देशन नहा करुंगा। चश्मों का नम्बर बढ़ जायेगा।

टीनामुनीम—में एक्टिंग नहीं करुंगी। जब बगैर एक्टिंग किये काम चल रहा है तो क्या ज़रूरत है। कहीं ऐसा न हो मैंने अभिनय करन की कोशिश की और बगैर अभिनय किय जो मिला है वह भी जाता रहे।

फिरोज खां—कुर्बानी जैसी कोई फिल्म और मेरी हिट हो जाये तो बात बन जाय ऽऽ-ऽऽ . . .हां हां . . .बात बन जाये ऽऽऽऽऽ।

बिन्दिया—१९८० में मुझे हर जगह विनोद का हाथ पकड़े देखा गया। इस वर्ष कभी-२ उसका हाथ छोड़ दिया करुंगी कहा लोग यह न समझें कि मैं कंजूस हूं। उसे खर्च करने से रोकने के लिये हाथ पकड़े रहती हूं।

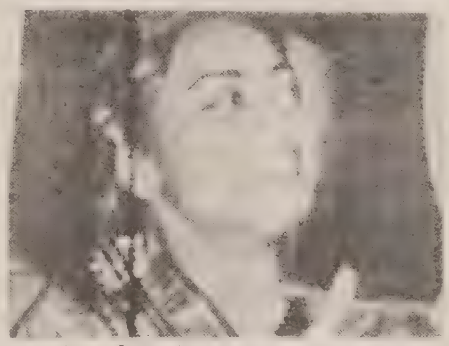
मिथुन चक्रवर्ती—मैं कलकत्ता नहा जाऊंगा। वहां लोग मुझे कालीघाट के गुंडे के नाम से जानते हैं।

कुमार गौरव—लव स्टोरी के बाद मैं नयी फिल्म बनाऊंगा ''सगाई टूट गयी''।

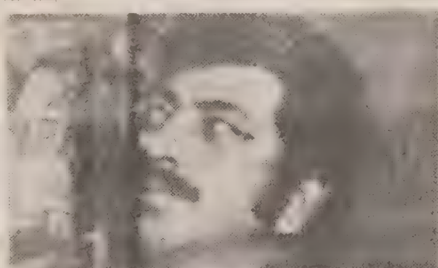
राजेन्द्र कुमार—अगर बेटा कुमार गौरव हिट हो गया तो प्रोडयूसरों से पैसे वसूलने और इंकम टैक्स वालों को टालने का काम करुंगा। अगर नहीं तो फिल्मी पार्टियों में खाना खा कर गुजारा करता रहूंगा।

राज बब्बर—मैं कोशिश करुंगा कि बगैर बलात्कार किये मेरी फिल्में चलें। पता नहा पब्लिक की रुचि का तराजू क्या है। इन्साफ के तराजू का तो मुझे पता है।

संजीव कुमार—इस साल भी शादी नहीं करुंगा और पेट का व्यास २ इंच बढ़ा लूंगा।



रामेश्वरी—मैं भगवान बाला जी के मन्दिर जाकर मनौती मनाऊंगी जया भादुडी के एक और बच्चा हो। फिर वह फिल्मों में नहा आ सकेगी और मेरी मार्केट को खतरा नहीं होगा।



अमजद खां—क्या वे कालिया, १९८१ भी आ गया? हां . . .१९७५ में जब शोले लगी थी उसके बाद के जितने शाल आ रहे हैं उन सबको गोली से उड़ा दे।

नीतू-ऋषिकपूर—अब के लड़का होना चाहिये। लड़की के लिये उपयुक्त नाम की तलाश में हम हिन्दुस्तान की सारी टेलीफोन डायरेक्टरियां छानेंगे।

चित्र वर्ग पहेली

15 रू० इनाम



ु ना ग रा ग ह

लजकमी र

य च ि ना ा ल ब प ी ि

न ी ल ा ा फ ख्र

ज ट ल ु ह ख्र ा

उत्तरः——

होना

अन्तिम तिथि—२१-३-८१

पिरोया अरबे

अहरण काना

ज्योतिष के गुर

परीक्षाफल जानने के उत्सुक चार विद्यार्थी एक ज्योतिषी के पास गये, ज्योतिषी ने उन्हें मुँह से बोल कर कुछ नहीं बताया, बस एक उंगली आगे बढ़ा दी।

परीक्षाफल निकला तो उनमें से केवल एक ही विद्यार्थी उत्तीर्ण था। विद्यार्थी, पंडितजी के पास गये और पूछा, ''आपको कैसे पता चल गया था?''

''बात बिलकुल सीधी है'' पंडितजी ने जवाब दिया, ''यदि तीन पास होते तो एक उंगली का अर्थ होता एक फेल होगा, चारों पास हो जाते तो संकेत का अर्थ होता एक भी फेल नहीं होगा, और यदि चारों फेल हो जाते तो अर्थ होता कि एक भी पास नहीं होगा।

एक महिला डाक्टर सदा ठीक बताती थी कि लड़का होगा या लड़की। एक बार उसकी एक घनिष्ट मित्र ने पूछा तुम ऐसा क्यों करती हो? वो बोली तरकीब बिलकुल सरल है, लड़की की इच्छा रखने वाली स्त्री को मैं कहती हूँ, तुम्हारे लड़का होगा परन्तु उसी समय अपनी डायरी में उसके नाम और समय के साथ, लिख लेती हूँ लड़की होगी।

इस प्रकार लड़का होने पर तो मेरी बात ठीक हो ही जाती है और यदि लड़की हो जाती तो मैं डायरी दिखा कर कह देती थी कि 'देख लो मैंने तो डायरी में लड़की ही लिखा है, केवल तुम्हारा मन रखने को लड़का कहा था'।





सुरेश कुमार मंलग, न्यू इंडिया अजय कुमार :अधल राम लीला फैन्सी स्टोर बलागीर (उड़ीसा), प्लाट के सामने मे.न. १०८ १८ वर्ष पत्र-मित्रता करना, वा.न. विकासनगर (दे.दून)

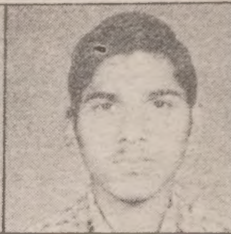
आयु .... .शौक ....

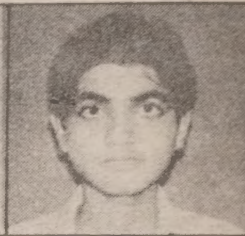
तेज प्रैस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

दीवाना फ्रैंड्स क्लब


विपिन कंसल, १७क ७ लाल कोठी, ज्योति नगर, जयपुर-५, १४वर्ष, पॉपसंगीत, टिकट संग्रह।

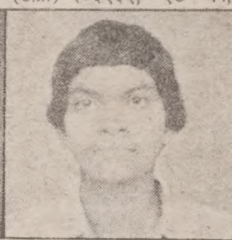

हरीश गोयल, ५०९५, जैन स्ट्रीट, भटिण्डा-१५१००१, ११ वर्ष, क्रिकेट खेलना।


प्रदीप गुप्ता 'टन्नु' ७३, दुर्गा भवन, माल पुरा स्ट्रीट, खुरजा (उ.प्र.)-२०३१३१, १८ वर्ष,


सैयद शादाब अहसन, प्रिंस बिल्डिंग ६६, (उ.प्र.), १५ वर्ष, क्रेकट खेलना।

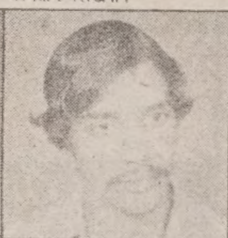

संजय टण्डन, ४३ कनैडी एवनयू, माल रोड अमृतसर-१४३००१; १२ वर्ष, स्कैचिंग।


सुनीत कुमार गुप्ता (कन्ठे वाले), घास मंडी ग्वालियर-३, १७ वर्ष, कवितायें लिखना।

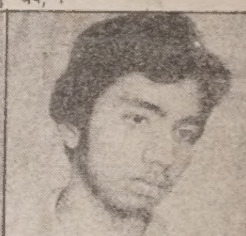

देवेन्द्र पाल चौहान, ८८ खिड़की मालवीय नगर, नई दिल्ली, १९ वर्ष, क्रिकेट खेलना, गाने गाना।

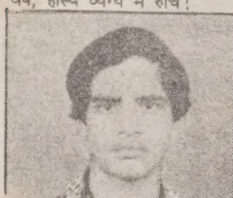

राजकुमार साहू "राज", बाहर ओरछा गेट झांसी-१२०, १३ वर्ष, ।

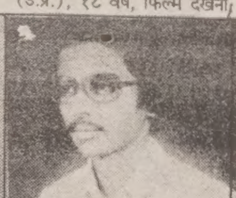

प्रमोद दीवान 'दीवाना', ४जे/३४ आयुध निर्माणी मुरादनगर, १९ वर्ष, हास्य व्यंग्य में रुचि!


सुरेन्द्र कुमार फकीरा, ग्रा. पो. जहांगीरपुर, जिला बुलन्दशहर (उ.प्र.), १८ वर्ष, फिल्म देखना।

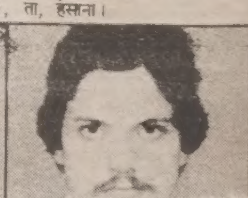

मनोहर सिंह टक्कर, M/s खजान सिंह गुरमुख सिंह जुगराओ-१४२०२६ (पंजाब),


राजेश चुघ १५७A, ब्लाक, नई मण्डी सिरसा, १८ वर्ष, पत्र मित्रता, हंसाना।









अपहरण काना

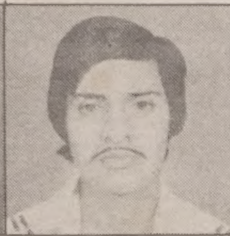
दीवाना फ्रैंडस क्लब के मेम्बर बन कर फ्रैंड्शिप के कालम में अपना फोटो छपवाइये। मेम्बर बनने के लिए कूपन भर कर अपने पासपोर्ट साइज के फोटोग्राफ के साथ भेज दीजिये जिसे दीवाना तेज साप्ताहिक में प्रकाशित किया जायेगा। फोटो के पीछे अपना पूरा नाम लिखना न भूलें।



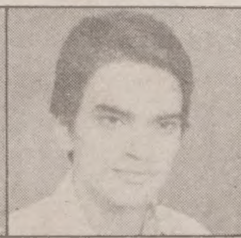
जय गोपाल द्वारा आर. एल. गोयल. ५०९५ जैन स्ट्रीट, भटिण्डा, १६ वर्ष, क्रिकेट खेलना।



महेश कुमार चेतवाणी ज्योती ड्रेसेज काटजा(लाड), १८ वर्ष, क्रिकेट खेलना, गाना गाना।



अनिल जेठवानी, सिन्धी कंप मूलियापुर अकोल (महा.) १९ वर्ष, क्रिकेट खेलना।



हरीओउम् उपाध्याय, ४०२ शम्भू नगर, शिकोहाबाद, मैनपुरी (उ.प्र.) २०५१३५; १९वर्ष, पढ़ना।



दिनेश कुमार परिहार, रेलवे कालोनी माता घर, आबूरोड जिला सिरोही, १६ वर्ष।



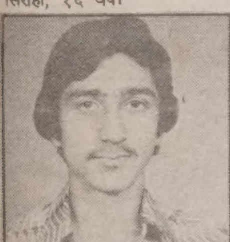
संजीव कुमार काबरा, माहेश्वरी ट्रेडिंग कं०, गोला रोड, समस्तीपुर (बिहार) १२ वर्ष।



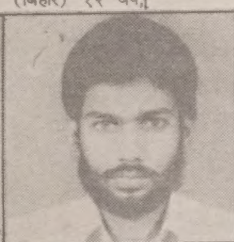
प्रमोद कुमार अर्गल(लल्लन), १३९, फूटाताल, जबलपुर (म.प्र.) २० वर्ष, फिल्म देखना, घूमना, पढ़ना, मित्रता।



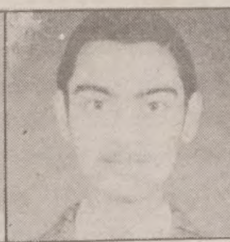
तपन कुमार दास, दलदरी बाजार (छपरा) १६ वर्ष, पत्र-मित्रता करना, दीवाना पढ़ना।



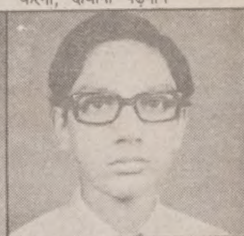
राकेश चड्ढा, १५१; एल. आई. सी. बिल्डिंग, कानपुर, १७ वर्ष, पत्र-मित्रता करना।



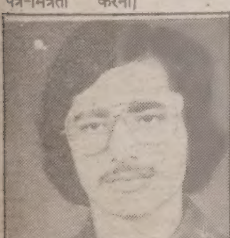
अमर नाथ 'केस', अनामिका क्लब आफ भुडिया पो. सन्डौला, जि. भागलपुर, २१ वर्ष।



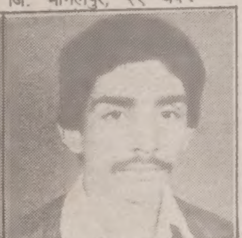
चन्द्र प्रकाश, २३७१; नेहरू कालोनी, हाथरस-२०४१०१ (उ.प्र.) २१ वर्ष।



राकेश कुमार मित्तल, ५३/१-A/२, किशनगढ़, न्यू ईदगाह, आगरा, २० वर्ष.



सुरेश कुमार मंलग, न्यू इंडिया फैन्सी स्टोर बलागीर (उड़ीसा), १८ वर्ष पत्र-मित्रता करना।



अजय कुमार सिघल राम लीला प्लाट के सामने मे.न. १०८ वा.न. विकासनगर (दे.दून)

हमारा पता : दीवाना फ्रैंड्स क्लब, ८-बी, बहादुरशाह जफर मार्ग, नई दिल्ली ११०००२.

कृपया अपना नाम व पता हिन्दी में साफ साफ लिखें।

नाम ....

....

पता ....

....

आयु ....**शौक** ....

तेज प्रैस, नया बाजार, दिल्ली में तेज प्राइवेट लिमिटेड के लिए पन्नालाल जैन द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।
प्रबन्ध सम्पादक विश्वबन्धु गुप्ता।

पृष्ठ२५से आगे

फिर उसने अपने साथी से कहा 'घर के पिछवाड़े में कपड़े सुखाने की एक रस्सी लटक रही' है उसे ले आओ'।

दूसरे आदमी ने चुस्ती से राजू की जेबों की तलाशी ली और उसकी जेब से उसका कीमती चाकू निकाल कर कहा, 'बहुत खूबसूरत,! अगर ज़रूरत पड़े तो एक आध काटने के लिये बिलकुल उपयुक्त है'।

राजू चुप था, गहरी आवाज़ वाला, काफ़ी शिक्षित प्रतीत होता था वह बदमाशों जैसा नहीं था, अपितु रुखी आवाज़ वाला पूरा ठग दीखता था, परन्तु जाहिर था कि हुक्म गहरी आवाज़ वाले का ही चल रहा था।

दरवाज़े में एक छोटा सा घबराया सा दिखनें वाला सफेद बालों वाला आदमी जिसने सोने के फ्रेम का चश्मा पहन रखा था दिखाई दिया। ये केवल मि० जैक्सन ही हो सकते हैं



अब देखो, इस लड़के को मारो मत, उसनें चिन्तित स्वर में कहा। तुमने मुझ से पहले ही वायदा किया था कि किसी प्रकार की मारपीट तथा कोई ख़तरा नहीं होगा।

'हमें अकेला छोड़ दो, राजू को पकड़ने वाले ने सीधा उत्तर दिया।

'हम मारपीट नहीं करेंगे, बशर्ते मोटू हमारे साथ सहयोग करे।'

'अब अपना काम करो!'

बुज़ुर्ग सा दीखने वाला व्यक्ति, आगे वाले कमरे में वापिस चला गया। रुखी आवाज़ वाला व्यक्ति, कपड़े सुखाने की रस्सी के टुकड़े ले आया और दो व्यक्तियों ने राजू को कुर्सी से बान्धना आरम्भ किया। उन्होंने उसके हाथ कुर्सी की बाहों से और टाँगे कुर्सी के पैरों से तथा कमर कुर्सी की पिछाड़ी से कस कर बांध दिये। ज़ब वे बाँध चुके तो राजू के लिये हिलना भी मुश्किल हो गया था।

'अच्छा! लड़के' भारी आवाज़ वाला बोला 'अब हम बात-चीत कर सकते हैं, बताओ मानक कहाँ है?'

'मुझे मालूम नहीं', राजू ने उत्तर दिया 'हम भी उसे ढूंढ़ रहे हैं।

'यह हम से सहयोग नहीं कर रहा', दूसरे व्यक्ति ने कहा, और खिड़की में रक्खा राजू का चाकू उठा लिया और उसे खोल कर उसका चमकता फल दिखा कर कहने लगा 'जो' मुझे इस लड़के को थोड़ा इस से गुदगुदाने दो, इससे इसे ठीक उत्तर देने का मूड बनाने में सहायता मिलेगी।'

''इसे मुझे ही सम्भालने दो', उसके साथी ने उत्तर दिया ''शायद इसे पता नहीं है, परन्तु मुझे पक्का विश्वास है कि इसे कुछ-न-कुछ मालूम है। अच्छा मोटू मुझे इस का जवाब दो, अगस्ट् की प्रतिमा में वह पत्थर नकली क्यों था?

'मुझे पक्का पता नहीं' राजू बोला। राजू ने सोच लिया था कि बेहतर है कि वह इनके प्रश्नों के उत्तर दे दे, क्योंकि उसे चमकती आँख का पता तो था नहीं या यूँ कहो ओक्टेवियन की प्रतिमा का पता मालूम नहीं था—और यदि वह इन दोनों व्यक्तियों को विश्वास दिला दे कि उसे मालूम नहीं, तो शायद वे उसे छोड़ दे। 'मेरे ख्याल से मि० अगस्त ने अगस्त की प्रतिमा में नकली मानक को ढूंढ़ने का प्रयास करने वाले को गुमराह करने के लिये रखा होगा। वे चाहते थे कि ढूंढ़ने वाला समझे कि उसे 'चमकती आंख' मिल गई है, और इसी कारण उन्होंने यह कार्य सरल रखा था'।

'फिर उन्होंने असली मानक कहाँ रखा था, भारी आवाज़ वाले व्यक्ति 'जो' ने पूछा?

'एक और प्रतिमा में, राजू बोला 'जिसके विषय में लोग जल्दी से अनुमान नहीं लगा पायेंगे', ओक्टेवियन की प्रतिमा में।'

'अरे हाँ! जो तुरन्त बोला, ओक्टेवियन एक रोमन बादशाह था जिसे ओगस्टस कहते थे. अगस्टस—अगस्त—समझे?

क्रमशः